विशाल इण्डिया

गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

सच्चाई की राह पर!

वर्ष: 13 | अंक: 179 | गौतमबुद्धनगर, मंगलवार 28 मई 2024 | पृष्ठ : 08 मूल्य : 02 रूपये | आरएनआई नं. UPHIN/2014/55236

P- 3

नोएडा में भीषण गर्मी से लोग परेशान

P- 4

अग्नि सुरक्षा के उपायों के सम्बन्ध में विशेष प्रचार-प्रसार किया जाये

P- 5

सऊदी विदेश मंत्री फैसल ने इजरायल के इस रुख पर जाहिर की चिंता

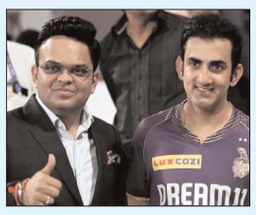

P- 6

गौतम गंभीर से बात करते दिखे जय शाह, टीम इंडिया के हेड कोच को

हैप्पी मॉर्निंग

काफी दिनों बाद चिंटू पार्क में घूमने गया,
घर लौटकर उसने अपनी पत्नी को बताया- जानती हो लोग मुझे भगवान मानने लगे हैं।
पत्नी- ये तुमने कैसे जाना।
चिंटू- जब मैं पार्क में गया था, वहां पर औरतें मुझे देख कर बोली, हे भगवान तू फिर आ गया।

शायरी

न मैं गिरा और न मेरी उम्मीदों के मीनार गिरे,
पर कुछ लोग मुझे गिराने में कई बार गिरे

अर्थसार

सेंसेक्स:
75,390.50
-19.89 (0.026%)
निफ्टी:
22,932.45
-24.65

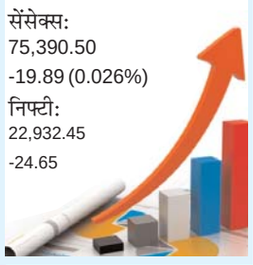

मौसम

अधिकतम : 47 डिग्री से0
न्यूनतम : 31 डिग्री से
सूर्योदय बुधवार : 5 : 25
सूर्यास्त मंगलवार : 7 : 14

रेमल चक्रवात से बंगाल में चार लोगों की मौत, कोलकाता में पानी भरा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में चक्रवाती तूफान रेमल के भारी तबाही मचाने के बाद भारी बारिश होने से कम से कम चार लोगों की मौत हो गयी हैं। आधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को यह जानकारी दी।

तूफान के कारण कोलकाता के कुछ हिस्सों में पानी भर गया। इसके अलावा राज्य में सैकड़ों पेड़ उखड़ गये और बिजली के खंभे गिर गये, जिससे महानगर में जनजीवन प्रभावित हुआ है।

कोलकाता पुलिस ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा, चक्रवात रेमल से शहर के कई इलाके बुरी तरह प्रभावित हुये हैं।

हमारे आपदा प्रबंधन समूह के कर्मी और विभिन्न पुलिस थानों के कर्मी यातायात को सुचारु रूप से चालू

रखने के लिये तूफान में गिरे कई पेड़ों को हटाने के लिये पूरी रात प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि मध्य कोलकाता में एक घर की छत का एक हिस्सा गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गयी, जबकि दक्षिण 24 परगना के मौसुनी द्वीप में एक महिला पर पेड़ गिरने से उसकी मौत हो गयी और पूर्व बर्धमान के मेमारी में एक पिता-पुत्र की बिजली की चपेट में आने से मौत हो गयी।

आधिकरिक सूत्रों ने कहा कि अपने आंगन में केले के उखड़े हुये पेड़ों की सफाई करते समय बिजली का तार गिरने से पिता-पुत्र दोनों की करंट लगने से मौत हो गयी।

कोलकाता नगर निगम के मेयर फिरहाद हकीम ने तूफान आने पर रात के दौरान केएमसी नियंत्रण कक्ष संभाला।

6 राज्यों में 3 दिन बाद गर्मी से राहत

5 दिन में केरल पहुंचेगा मानसून; लू से राजस्थान में 4 दिन में 33 मौतें

नई दिल्ली। नौतपा में भीषण गर्मी का सामना कर रहे राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में तीन दिन बाद हीटवेव से राहत मिलने की संभावना है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के मुताबिक, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में बिजली गरजने और चमकने की संभावना है, जबकि जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बारिश हो सकती है।

मौसम विभाग के प्रमुख मृत्युंजय मोहपात्रा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि राजस्थान और गुजरात में नौ से 12 दिन हीटवेव चली है, जिसमें तापमान 45 से 50 के बीच रहा है। वहीं, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब में पांच से सात दिन हीटवेव चली है, जिसमें

तापमान 44 डिग्री से 48 डिग्री तक रहा है। वहीं, मौसम विभाग ने यह भी बताया कि केरल में अगले पांच दिन में मानसून के पहुंचने की स्थिति बनती नजर आ रही है। आईएमडी ने पहले ही बताया था कि मानसून 31 मई तक केरल से टकराएगा। इसके केरल पहुंचने की सामान्य तारीख 1 जून है। इसके साथ ही इस साल सामान्य से बेहतर मानसून होने का अनुमान जताया गया है।

इससे पहले सोमवार को जैसलमेर में भारत-पाक सीमा पर तैनात बीएसएफ जवान की लू लगने से मौत हो गई। वहीं जोधपुर के पुलिस लाइन में तैनात एक कॉन्स्टेबल की गर्मी से जान चली गई। राजस्थान में 4 दिन में गर्मी से मरने वालों की संख्या 33 हो चुकी है। बिहार में भी नगालैंड के जवान की हीट स्ट्रोक से मौत हुई है।

नौतपा का तीसरा दिन, राजस्थान-पंजाब में कल भी हीटवेव का अलर्ट

आज नौतपा का तीसरा दिन है। बीते 2 दिन में राजस्थान के फलोदी में तापमान सबसे ज्यादा दर्ज किया गया। नौतपा के पहले दिन यहां तापमान 50 , जबकि दूसरे दिन 51 रहा। रविवार को जम्मू में तापमान 42 और हिमाचल के ऊना में 44.4 तक पहुंच गया। रविवार को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में 37 जगहों का तापमान 45 डिग्री या उससे ज्यादा दर्ज किया गया। एक दिन पहले यानी शनिवार को देश में सिर्फ 17 जगहों का तापमान 45 डिग्री या उससे ज्यादा था। मौसम विभाग के मुताबिक, मंगलवार के लिए राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में भीषण हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात में अलग-अलग इलाकों में हीटवेव का यलो अलर्ट जारी किया था।

छत्तीसगढ़ में बजरंग दल नेता और युवती की हत्या

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर में बजरंग दल के जिला सह संयोजक सुजीत सोनी (25) और एक युवती की हत्या कर दी गई। इसके बाद लड़की के शव को जलाने का भी प्रयास किया गया। दोनों का शव सोमवार को बलरामपुर-अंबिकापुर हाईवे के किनारे पड़ा मिला। आशंका जताई जा रही है कि प्रेम प्रसंग के चलते हत्या की गई है। मामला बलरामपुर थाना क्षेत्र के डुमरखी गांव का है। दोनों का शव वहां स्थित ढाबे से करीब 100 मीटर दूर जंगल में मिला है। लड़की की शिनाख्त बलरामपुर निवासी किरण काशी (22) के रूप में हुई है। वहीं सुजीत सोनी व्यवसायी परिवार से है। इसके बाद गुस्साए व्यापारियों ने शहर बंद कर चौक पर टायर जलाकर चक्काजाम कर दिया। सुबह 11 बजे से एनएच-343 पर लगाया गया जाम 4 घंटे बाद 3 बजे खत्म हुआ। एसडीएम और पुलिस अफसरों ने आश्वस्त किया है कि 72 घंटे में आरोपियों की गिरफ्तारी होगी। वहीं मांगों को लेकर सहमति पत्र पर साइन भी कराया गया है।

दिल्ली अस्पताल हादसा- आरोपी 30 मई तक पुलिस हिरासत में

चाइल्ड केयर सेंटर के मालिक पर पहले भी दर्ज हो चुके लापरवाही के दो केस

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के विवेक विहार इलाके में बेबी केयर सेंटर में 8 ऑक्सीजन सिलेंडर फटने से लगी आग में 6 नवजातों की मौत हो गई। ये बच्चे एक दिन से लेकर 25 दिन के थे।

मामले में आरोपी अस्पताल मालिक डॉ नवीन खिची और डॉ आकाश को तीन दिन (30 मई तक) की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। दिल्ली पुलिस ने चाइल्ड हॉस्पिटल

के मालिक नवीन खिची के खिलाफ आईपीसी की धारा 336 (दूसरों की निजी सुरक्षा को खतरे में डालना), 304 ए (लापरवाही से मौत) और 34 (आपराधिक गतिविधि) के तहत एफआईआर दर्ज की थी। नवीन घटना के बाद से फरार था। उसे रविवार को गिरफ्तार किया गया था।

दिल्ली के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने सोमवार को बताया कि अस्पताल का रजिस्ट्रेशन मार्च 2024 में खत्म हो गया था। अस्पताल के मालिक का पश्चिम पुरी में भी अस्पताल है।

उस अस्पताल में सरप्राइज इंस्पेक्शन के दौरान कई कमियां पाई गई थीं, जिसके चलते दो अलग मामलों में उसके खिलाफ दो मामले दर्ज हो चुके हैं।

एक दिन बाद घटना की जानकारी मिली

हादसे में अपने बच्चों को खोने वाले परिवारों ने अस्पताल पर घटना की जानकारी देर से देने का आरोप लगाया है। एक परिवार ने आरोप लगाते हुए कहा कि अस्पताल में आग रात के 11-12 के बीच लगी थी। हमें जानकारी आज (26 मई) की दोपहर में दी गई। अस्पताल वाले हमारे बच्चे के बारे में जानकारी नहीं दे रहे हैं। अस्पताल वाले नहीं बता रहें हैं कि बच्चे के कहां गया रखा गया है। हमें इसकी जानकारी चाहिए, जिससे बच्चे की पहचान कर सकें।

पेनाल्टी — जबलपुर में 11 निजी स्कूलों पर 22 लाख की पेनाल्टी; 51 पर एफआईआर, 20 गिरफ्तार

प्राइवेट स्कूलों को लौटाने पड़े फीस के 81.30 करोड़ रुपए

एजेंसी

भोपाल। जबलपुर में कोर्स की किताबें, यूनिफॉर्म और अन्य शिक्षण सामग्री के नाम पर अभिभावकों से मनमानी राशि वसूलने वाले निजी स्कूलों के खिलाफ प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की है। ऐसे स्कूलों से अभिभावकों को 81.30 करोड़ रुपए की फीस वापस कराई गई है। साथ ही इन स्कूलों पर 22 लाख रुपए की पेनाल्टी भी लगाई है।

प्रशासन ने 51 लोगों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज की है। जिनमें स्कूलों के चेयरमैन, प्राचार्य, सीईओ, मैनेजर, सदस्य, एडवाइजर समेत 20 लोग गिरफ्तार किए गए हैं।

अप्रैल 2018 से अप्रैल 2024 तक वसूली फीस की कराई जांच

दरअसल, नया शिक्षा सत्र शुरू होने के बाद 1 अप्रैल 2024 को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने निजी स्कूलों की मनमानी रोकने के लिए निर्देश दिए थे। इस पर जबलपुर कलेक्टर दीपक सक्सेना ने अप्रैल 2018 से अप्रैल 2024 तक अभिभावकों से वसूली गई फीस की जांच कराई थी। जिसमें बस्तों के वजन गाइडलाइन के मुताबिक नहीं पाए गए।

जांच में 4.12 करोड़ रुपए की कमीशनखोरी भी हुई उजागर

11 स्कूलों की जांच में फीस, बस्ते और ड्रेस में 4.12 करोड़ रुपए की कमीशनखोरी भी उजागर हुई है। इसके बाद 51 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया।

इसमें स्कूल प्रबंधन से जुड़े 30 लोग, 5 पुस्तक विक्रेता और 16 प्रकाशक से संबंधित लोग हैं।

जांच में यह भी सामने आया है कि फर्जी और डुप्लीकेट पुस्तकों, नवीन पुस्तकों को पाठ्यक्रम में शामिल कराकर बस्तों का बोझ बढ़ाया गया है।

कलेक्टर-एसपी ने सोशल मीडिया पर लोगों से किया संवाद

जबलपुर कलेक्टर दीपक सक्सेना और एसपी आदित्य प्रताप सिंह ने निजी विद्यालयों की मनमानी फीस वसूली और पुस्तक स्टेशनरी में की जा रही कमीशनखोरी की जांच के बाद सोमवार को लोगों से फेसबुक पर लाइव संवाद किया। दोनों ही अधिकारियों ने निजी विद्यालयों की फीस वसूली की जांच में आए तथ्यों की जानकारी दी। साथ ही कहा कि ऐसे मामलों से प्रशासन को अवगत कराएं। जिससे कार्रवाई की जा सके।

दिल्ली सीएम के पीए की जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली। स्वाति मालीवाल से मारपीट केस में सोमवार 27 मई को अरविंद केजरीवाल के पीए बिभव कुमार की जमानत याचिका तीस हजारी कोर्ट ने खारिज कर दी। बिभव ने 25 मई को कोर्ट में याचिका लगाई थी। सुनवाई के दौरान स्वाति भी कोर्ट में मौजूद रहीं। बिभव के वकील हरिहरन ने सुनवाई के दौरान आरोप लगाया कि जब सेंसिटिव बॉडी पार्ट्स पर चोट के निशान नहीं मिले तो गैर इरादतन हत्या की कोशिश का सवाल ही नहीं है। न ही बिभव का स्वाति को निर्वस्त्र करने का कोई इरादा था। ये चोटें खुद को पहुंचाई जा सकती हैं। बिभव के वकील ने यह भी कहा कि पुराने जमाने में ऐसे आरोप कौरवों पर लगे थे, जिन्होंने द्रौपदी का चीरहरण किया था। स्वाति ने यह एफआईआर पूरी प्लानिंग करके 3 दिन बाद दर्ज कराई है। ये दलीलें सुनकर स्वाति कोर्ट रूम में ही रो पड़ीं। स्वाति ने बताया कि बिभव कोई आम आदमी नहीं है, वह मंत्रियों को मिलने वाली सुविधाएं इस्तेमाल करता है। उसे जमानत मिली तो मुझे खतरा होगा। बिभव के वकील बोले- केवल जमानत मांगी, बरी करने की अपील नहीं की कोर्ट में बिभव के वकील ने कहा कि सीएम हाउस से सीसीटीवी पहले ही बरामद कर लिया गया है, इसलिए उसमें टेम्परिंग या छेड़छाड़ का कोई सवाल ही नहीं है।

गेम जोन अग्निकांड : हाईकोर्ट की फटकार के बाद ऐक्शन

कई अफसरों के तबादले, 7 सस्पेंड

राजकोट के गेम जोन अग्निकांड को लेकर गुजरात सरकार ऐक्शन मोड में आ गई है। गुजरात सरकार ने सोमवार को तीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और राजकोट के एक शीर्ष नगर निकाय अधिकारी का तबादला कर दिया। इस मामले में सात अधिकारियों को निलंबित भी किया गया है। बता दें कि इस भयावह अग्निकांड में बच्चों सहित 28 लोगों की मौत हुई है। निलंबित अधिकारियों को बिना मंजूरी के गेम जोन का संचालन होने देने के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

किन अधिकारियों के तबादले?

राजकोट के पुलिस आयुक्त राजू भार्गव का तबादला कर दिया गया है। उनकी जगह अब आईपीएस अधिकारी बृजेश कुमार झा को नियुक्त किया गया है।

वहीं राजकोट शहर की अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (प्रशासन, यातायात और अपराध) विधि चौधरी और राजकोट के डीसीपी-जोन 2 सुधीरकुमार जे देसाई का भी तबादला किया गया है। राजकोट नगर आयुक्त आनंद पटेल का भी तबादला किया गया है। उनकी जगह अहमदाबाद

शहरी विकास प्राधिकरण के सीईओ डीपी देसाई को नियुक्त किया गया है।

गुजरात हाईकोर्ट की फटकार के बाद ऐक्शन

गुजरात सरकार का यह ऐक्शन हाईकोर्ट की फटकार के बाद सामने आया है। गुजरात हाईकोर्ट ने इस मामले में राजकोट नगर निकाय और राज्य सरकार की खिंचाई की थी। अदालत ने पूछा था कि अधिकारियों ने बिना सुरक्षा मंजूरी के इतनी बड़ी संरचना के निर्माण पर चुप्पी क्यों साधे रखी। अदालत ने यह भी कहा कि 2021 से 25 मई यानी घटना के दिन तक सभी राजकोट नगर आयुक्तों को इस त्रासदी के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

इन्हें किया गया सस्पेंड

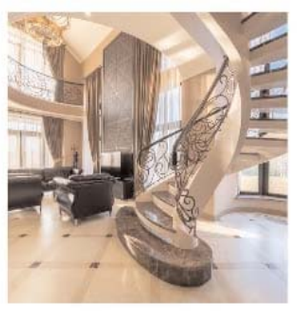

इसके साथ ही अदालत ने सभी अधिकारियों को व्यक्तिगत हलफनामा प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। राज्य सरकार ने मामले में छह अधिकारियों को निलंबित करने का आदेश भी दिया है। निलंबित किए गए अधिकारियों में आरएमसी के टाउन प्लानिंग सहायक अभियंता जयदीप चौधरी, सहायक टाउन प्लानर गौतम जोशी, राजकोट रोड्स एंड बिल्डिंग्स विभाग के उप कार्यकारी अभियंता एमआर सुमा और पारस कोठिया, पुलिस निरीक्षक वीआर पटेल और एनआई राठौड़ शामिल हैं।

संपादकीय

जब प्रधानमंत्री झूठ बोले

**सच्चाई की राह से भटके जो नेता,
उनका राज़ न टिके, ये तय है, जो देखा।**

जितेन्द्र चौधरी, प्रधान संपादक, विशाल इंडिया हिंदी दैनिक

एक लोकतांत्रिक देश में, प्रधानमंत्री का पद सबसे ऊँचा और सम्माननीय होता है। जनता अपने नेता पर विश्वास करती है और उसके हर शब्द को सच मानती है। लेकिन क्या हो जब प्रधानमंत्री स्वयं झूठ बोले और अपने वादों को निभाने में विफल रहे? नरेंद्र मोदी सरकार के तहत, कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जहाँ सच को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया या झूठ बोला गया। यह न केवल जनता के विश्वास को तोड़ता है, बल्कि लोकतंत्र की नींव को भी कमजोर करता है।

नरेंद्र मोदी के झूठ : तथ्यों के साथ

1. नोटबंदी का निर्णय

– वादा: नोटबंदी के समय मोदी ने कहा था कि यह कदम काले धन को समाप्त करने, नकली मुद्रा पर रोक लगाने और आतंकवाद की फंडिंग को रोकने के लिए उठाया गया है।

– सच्चाई: आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार, 99त्न नोट बैंकिंग सिस्टम में वापस आ गए, जिससे यह साबित हुआ कि काला धन सफेद किया गया और नकली मुद्रा और आतंकवाद पर भी इसका प्रभाव नगण्य रहा।

2. किसानों की आय दोगुनी करना

– वादा: 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का वादा किया गया था।

– सच्चाई: किसानों की आत्महत्या की दर बढ़ती जा रही है, और कृषि क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है। किसानों का आंदोलन इस विफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

3. 15 लाख रुपये हर नागरिक के खाते में

– वादा: 2014 के चुनाव प्रचार के दौरान, मोदी ने वादा किया था कि काले धन की वापसी के बाद हर नागरिक के खाते में 15 लाख रुपये आएंगे।

– सच्चाई: यह वादा कभी पूरा नहीं हुआ और बाद में इसे चुनावी जुमला कहकर खारिज कर दिया गया।

4. बेरोजगारी पर झूठे आंकड़े

– वादा: मोदी सरकार ने बार-बार दावा किया कि उसने करोड़ों रोजगार पैदा किए हैं।

– सच्चाई: सरकारी आंकड़ों के अनुसार, बेरोजगारी दर 45 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) की बढ़ती मांग भी इस तथ्य को प्रमाणित करती है।

5. स्वच्छ भारत मिशन

– वादा: 2019 तक भारत को पूरी तरह से खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाने का दावा किया गया।

– सच्चाई: कई रिपोर्ट्स और सर्वेक्षण बताते हैं कि देश के कई हिस्सों में अभी भी खुले में शौच की समस्या बनी हुई है।

6. कोविड-19 प्रबंधन

– वादा: सरकार ने दावा किया कि उसने कोविड-19 महामारी को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया है।

– सच्चाई: दूसरी लहर के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं की दुर्दशा, ऑक्सीजन की कमी, और टीकाकरण की धीमी गति ने सरकार के दावों की पोल खोल दी।

जब नेता झूठ बोले तो देश का क्या होगा?

जब देश का प्रधानमंत्री झूठ बोले, तो जनता का सरकार पर विश्वास कम हो जाता है। इससे न केवल सामाजिक अस्थिरता पैदा होती है, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता भी बढ़ती है। जनता के मन में सरकार के प्रति अविश्वास पनपता है और वे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए वैकल्पिक मार्ग अपनाने पर मजबूर हो जाते हैं।

निष्कर्ष

एक सच्चा नेता वह होता है जो अपने वादों को निभाता है और जनता के हित में काम करता है। लेकिन जब प्रधानमंत्री स्वयं झूठ बोले, तो यह देश के लिए एक गंभीर खतरा है। जनता को जागरूक रहना चाहिए और अपने नेताओं को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए।

**सच का साथ देकर ही हम एक मजबूत और प्रगतिशील भारत का निर्माण कर सकते हैं।
जो झूठ के सहारे सत्ता में हैं, उनका सच सामने आना ही चाहिये।**

बढ़ते तापमान से दुनिया के सामने भयावह विनाश का खतरा

अमीर देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती की जिम्मेदारियां गरीब और विकासशील देशों के कंधों पर डाल कर इस समस्या से निजात पाने का सपना देख रहे हैं। यह जगजाहिर है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से वैश्विक ताप बढ़ रहा है। हर वर्ष तापमान में कुछ और बढ़ोतरी दर्ज होने लगी है। गर्मी का मौसम लंबा होने लगा है। सर्दी में भी गर्मी का असर दिखता है। दुनिया के बहुत सारे इलाके जो पहले बर्फ से ढंके रहते थे, लू के थपेड़े सहने को मजबूर हो चुके हैं। लू की वजह से लोगों की जान भी खतरे में पड़ रही है। इसलिए हर वर्ष जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए आयोजित होने वाली बैठक में कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के संकल्प लिए जाते हैं। मगर हकीकत यह है कि इस दिशा में कोई उल्लेखनीय नतीजा दर्ज नहीं हो पा रहा है। चिंता जताई जा रही है कि अगर तापमान में बढ़ोतरी डेढ़ डिग्री सेल्सियस से पार गया, तो दुनिया के सामने विनाश का भयावह मंजर नजर आने लगेगा। मगर इस संकल्प पर दृढ़ता से आगे बढ़ने की अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखती। अमीर देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती की जिम्मेदारियां गरीब और विकासशील देशों के कंधों पर डाल कर इस समस्या से निजात पाने का सपना देख रहे हैं। छिपी बात नहीं है कि कार्बन उत्सर्जन के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार वे देश हैं, जो औद्योगिक उत्पादन अधिक करते हैं, जहां जैव ईंधन का इस्तेमाल ज्यादा होता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि जैव ईंधन के उपयोग में कटौती और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों पर अपनी निर्भरता बढ़ाएं। मगर ऐसा हो नहीं पा रहा। इसमें आम नागरिकों का भी योगदान अपेक्षित है। खासकर भारत जैसे विकसित हो रहे देश में, जहां गाड़ियों और औद्योगिक इकाइयों का तेजी से विस्तार हो रहा है। घरों, दफ्तरों, निजी और सार्वजनिक वाहनों या फिर गोदामों आदि को जिस तरह वातानुकूलित बनाने पर जोर दिया जा रहा है, वैसी स्थिति में कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना चुनौती बनता गया है। ऊपर से बुनियादी ढांचे के विकास पर अधिक जोर होने की वजह से जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, पृथ्वी की सतह का बड़ा हिस्सा कंक्रीट से ढंकता गया है। ऐसे में कार्बन और गर्मी को अवशोषित करने के नैसर्गिक माध्यम सिकुड़ते गए हैं। लोग वातानुकूलित वातावरण में रहने के अभ्यस्त होते गए हैं, इसलिए तापमान सामान्य से थोड़ा भी बढ़ जाए तो उन्हें सहन नहीं हो पाता।

अग्निकांडों ने हर भारतीय का दिल जख्मी किया

- ललित गर्ग-

गुजरात के राजकोट में एक एम्यूजमेंट पार्क के अंदर गेमिंग जोन में लगी आग की लपटें अभी ठीक से बुझी भी नहीं थीं कि शनिवार देर रात राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बच्चों के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में आग लगने से सात नवजात बच्चों की जान चली गयी। दोनों ही घटनाओं में हताहत होने वालों में ज्यादातर छोटे बच्चे हैं। निश्चित रूप से ये हादसे प्रशासनिक लापरवाही की उपज हैं, यही कारण है कि सिस्टम में खामियों और ऐसी आपदाओं को रोकने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही की निंदा की जा रही है। यह याद रखने योग्य है कि नियमित अंतराल पर मानवीय जिम्मेदारी वाले पहलू की अनदेखी से ऐसी गंभीर घटनाएं होने के बावजूद अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही कम होती नहीं दिख रही है। इन जहरीली काली आग ने कितने ही परिवारों के घर के चिराग बुझा दिए। कितनी ही आंखों की रोशनी छीन ली और एक कालिख पोत दी कानून और व्यवस्था के कर्णधारों के मुँह पर। 'अग्निकांड' एक ऐसा शब्द है जिसे पढ़ते ही कुछ दृश्य आंखों के सामने आ जाते हैं, जो भयावह होते हैं, त्रासद होते हैं, डरावने होते हैं। जीवन का हर पल दुर्घटनाओं का शिकार हो रहा है। दुर्घटनाओं को लेकर आम आदमी में संवेदनहीनता की काली छाया का पसरना हो या सरकार की आंखों पर काली पट्टी का बंधना-हर स्थिति में मनुष्य जीवन के अस्तित्व एवं अस्मिता पर सन्नाटा पसर रहा है।

इन दोनों मामलों में शुरुआती सूचनाएं ही संदेह का पुख्ता आधार प्रदान कर रही हैं। मसलन, यह बताया गया कि राजकोट के प्राइवेट एम्यूजमेंट पार्क में चल रहे गेमिंग जोन को फायर एनओसी नहीं मिला था। इसके बावजूद यह गेमिंग जोन धड़ल्ले से चल रहा था, बड़ी संख्या में बच्चे यहां महंगे टिकट लेकर आ रहे थे और अगर आग लगने की यह घटना न होती तो पता नहीं कब तक सब कुछ ऐसे ही चलता रहता। ठीक इसी तरह दिल्ली के बेबी केयर सेंटर की आग की घटना ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। एनआईसीयू में वेंटिलेटर पर ही 7 नवजात ने दम तोड़ दिया। आग की लपटें इतनी तेज थी कि बच्चों को पीछे के रास्ते से बड़ी मुश्किल से निकाला गया। 5 बेड की क्षमता वाले हॉस्पिटल में 12 बच्चों का इलाज हो रहा था। जाहिर है, एक बेड पर दो या तीन बच्चे थे। आग लगने, हॉस्पिटल के मिस मैनेजमेंट और लापरवाही का क्या स्थानीय प्रशासन को अंदाजा नहीं होना चाहिए कि उसके कार्यक्षेत्र में किस तरह के व्यवसाय कानूनी प्रक्रियाओं की अनदेखी करते हुए चलाए जा रहे हैं? प्रश्न है कि इन बढ़ती दुर्घटनाओं की नृशंस चुनौतियों का क्या अंत है? बहुत कठिन है दुर्घटनाओं की उफनती नदी में जीवनरूपी नौका को सही दिशा में ले चलना और मुकाम तक पहुंचाना, यह चुनौती सरकार के सम्मुख तो है ही, आम जनता भी इससे बच नहीं सकती। इन दोनों अग्निकांड़ों में पीड़ितजन तो सहानुभूति के पात्र हैं ही, पर इन घटनाओं के लिए सहानुभूति की पात्र देश की जनता भी है, जो भ्रष्ट, लापरवाह एवं लालची प्रशासनिक चरित्रों को झेल रही है। मनुष्य अपने स्वार्थ और रुपए के लिए इस सीमा तक बेईमान और बदमाश हो जाता है कि हजारों के जीवन और सुरक्षा से खेलता है। दो-चार परिवारों की सुख समृद्धि के लिए अनेक घर-परिवार उजाड़ देता है।

राजकोट हो या राजधानी में प्राइवेट संस्थानों में आग लगना-बेकसूर लोगों के मारे जाने की घटनाएं कोई नई या चौंकाने वाली बात नहीं है। कभी कोई फैक्ट्री इस वजह से सुर्खियों में आती है तो कभी कोचिंग संस्थान। कभी कोई अस्पताल तो कभी एम्यूजमेंट पार्क। घटना के बाद पता चलता है कि वे संस्थान तमाम कानूनी प्रक्रियाओं को ताक पर रखते हुए चलाए जा रहे थे। यही वजह है कि दोनों ही मामलों में तत्काल जांच के आदेश दे दिए गए। मगर आम तौर पर ऐसे आदेश घटना से उपजे असुविधाजनक एवं ज्वलंत सवालों की ओर से लोगों का ध्यान हटाने भर का काम करते हैं। आसमान से बरसती आग के बीच शनिवार को हुए इन दोनों अग्निकांडों में मासूमों व बच्चों की मौत ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। तंत्र की काहिली और आपराधिक लापरवाही के चलत ऐसे हादसे होते हैं जिनमें भ्रष्टाचार पसरा होता है, जब अफसरशाह लापरवाही करते हैं, जब स्वार्थ एवं धनलोलुपता में मूल्य बौने हो जाते हैं और नियमों और कायदे-कानूनों का उल्लंघन होता है।

आग क्यों और कैसे लगी, यह तो जांच का विषय है ही लेकिन इन व्यावसायिक इकाइयों को उसके मालिकों ने मौत का कुआं बना रखा था। आखिर क्या वजह है कि जहां दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, वही सारी व्यवस्थाएं फेल दिखाई देती है? सारे कानून कायदों का वहीं पर स्याह हनन होता है।

हर दुर्घटना में गलती भ्रष्ट आदमी यानी अधिकारी एवं व्यवसायी की ही होती है पर कारण बना दिया जाता हैं पुर्जों व उपकरणों की खराबी को। जैसे-जैसे जीवन तेज़ होता जा रहा है, सुरक्षा उतनी ही कम हो रही है, जैसे-जैसे प्रशासनिक सर्तकता की बात सुनाई देती है, वैसे-वैसे प्रशासनिक कोताही के सबूत सामने आते हैं, मरने वालों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन हर बड़ी दुर्घटना कुछ शोर-शराबें के बाद एक और नई दुर्घटना की बाट जोहने लगती है।

सरकार और सरकारी विभाग जितनी तत्परता मुआवजा देने में और जांच समिति बनाने में दिखाते हैं, अगर सुरक्षा प्रबंधों में इतनी तत्परता दिखाएं तो दुर्घटनाओं की संख्या घट सकती है। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है, क्यों नहीं हो रहा है, यह मंथन का विषय है।

राजधानी दिल्ली ही नहीं, देश में हर जगह कानूनों एवं व्यवस्थाओं की धज्जियां उड़ते हुए देखा जा सकता है। इंसान का जीवन कितना सस्ता हो गया है।

अपने धन लाभ के लिये कितने इंसानों के जीवन को दांव पर लगा देता है। मालिकों से ज्यादा दोषी ये अधिकारी और कर्मचारी हैं। अगर ये अपनी जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाते तो उपहार सिनेमा अग्निकांड नहीं होता, नन्दनगरी के समुदाय भवन की आग नहीं लगती, पीरागढ़ी उद्योगनगर की आग भी उनकी लापरवाही का ही नतीजा थी। बात चाहे पब की हो या रेल की, प्रदूषण की हो या खाद्य पदार्थों में मिलावट की-हमें हादसों की स्थितियों पर नियंत्रण के ठोस उपाय करने ही होंगे। तेजी से बढ़ता हादसों का हिंसक एवं डरावना दौर किसी एक प्रान्त या व्यक्ति का दर्द नहीं रहा। इसने हर भारतीय दिल को जख्मी किया है। इंसानों के जीवन पर मंडरा रहे मौत के तरह-तरह की डरावने हादसों एवं दुर्घटनाओं पर काबू पाने के लिये प्रतीक्षा नहीं, प्रक्रिया आवश्यक है। स्थानीय निकाय हो या सरकारें, लाइसेंसिंग विभाग हो या कानून के रखवाले- अगर मनुष्य जीवन की रक्षा नहीं की जा सकती तो फिर इन विभागों का फायदा ही क्या? कौन नहीं जानता कि ये विभाग कैसे काम करते हैं। सब जानते हैं कि प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर इंस्पैक्टर आते हैं और बंधी-बंधाई राशि लेकर लौट जाते हैं। लाइसेंसिंग विभाग में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार है। नैतिकता और मर्यादाओं के इस टूटते बांध को, लाखों लोगों के जीवन से खिलवाड़ करते इन आदमखोरों से कौन मुकाबला करेगा? कानून के हाथ लम्बे होते हैं पर उसकी प्रक्रिया भी लम्बी होती है। कानून में अनेक छिद्र हैं। सब बच जाते हैं। सजा पाते हैं गरीब आश्रित, निर्दोष अभिभावक जो मरने वालों के पीछे जीते जी मर जाते हैं। पुलिस व्यक्ति की सुरक्षा में तैनात रहती है जनता की सुरक्षा में नहीं।

भ्रष्ट अधिकारी नोट जुगाड़ने की कोशिश में रहते हैं, जनता की सुरक्षा के लिये नहीं। भ्रष्टाचार शासन एवं प्रशासन की जड़ों में पेठा हुआ है, इन विकट एवं विकराल स्थितियों में एक ही पंक्ति का स्मरण बार बार होता है, घर-घर में है रावण बैठा इतने राम कहां से लांऊ। भ्रष्टाचार, बेईमानी और अफसरशाही इतना हावी हो गया है कि सांस लेना भी दूभर हो गया है।

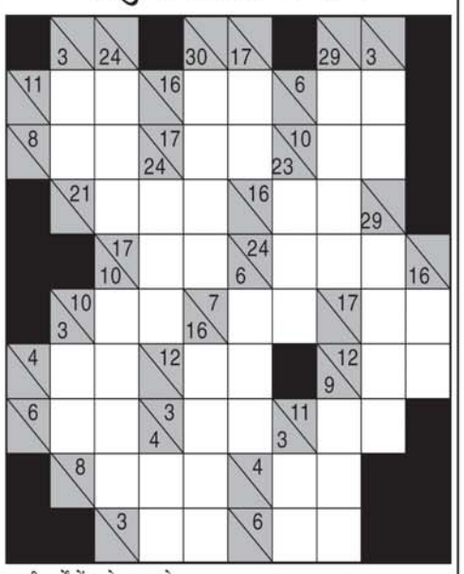

टाईम पास

काकुरो पहेली -3195

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

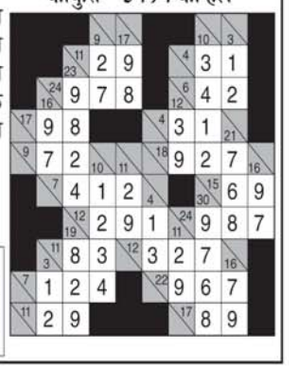

उदाहरणतः:

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 3194 का हल

लॉफिंग ज़ोन

एक चोर अदालत में अपनी गवाही देने खुद ही खड़ा हो गया। वहाँ खड़ा होकर जब वह अनाप-शनाप बकने लगा तो न्यायाधिश ने झुँझलाकर कहा- तुमको तो ठीक से झूठ भी नहीं बोलना आता।

चोर- तो मैं क्या करूँ महोदय।

न्यायाधिश- तुम एक वकील को अप्वाइंट क्यों नहीं कर लेते। ताकि तुम आसानी से झूठ बोल सको।

□ □ □

ब्यूटी-क्लीनिक पहुँची एक महिला डॉक्टर से बोली- मेरे चेहरे को और सुंदर बनाने के लिए क्या फीस लगेगी?

डॉक्टर साहब (गंभीर होकर बोले)- पाँच हजार पाँच सौ रुपए।

निराश होकर महिला बोली- इससे सस्ता कोई उपाय नहीं है क्या? सुझाइए न!

डॉक्टर साहन ने सलाह दी- इससे सस्ता उपाय भी है...। आप बस घूँघट काढ़ना शुरू कर दीजिए।

□ □ □

प्रेमी (प्रेमिका से)- क्या तुम जानती हो, संगीत में इतनी शक्ति है कि उससे पानी भी गरम हो सकता है।

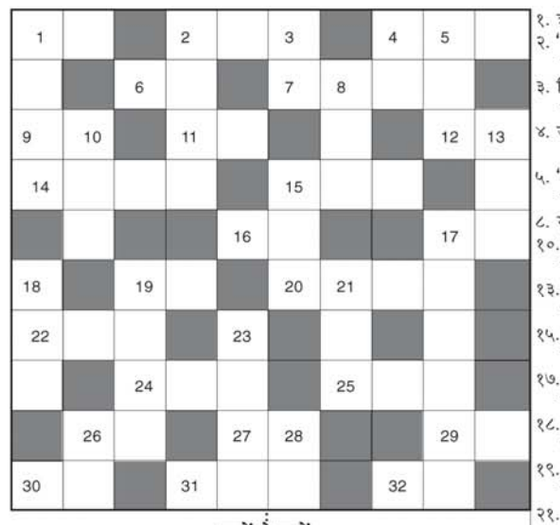

प्रेमिका- हाँ हाँ क्यों नहीं! तुम्हारा गाना सुन कर मेरा खून खौल सकता है, तो फिर पानी क्यों नहीं?

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 3195

बायें से दायें:-

१. 'बरसो रे मेघा' गीत वाली फिल्म-२
२. राजेशखन्ना, धर्मेन्द्र, वहीदा की फिल्म-३
४. 'नींद कभी रहती थी आँखों में' गीत वाली फिल्म-३
६. राज सोलंकी, हिना रहमान, पायल की फिल्म-२
७. 'कहना है जो दिल से कहो' गीत वाली फिल्म-४
९. संजीवकुमार, नूतन की फिल्म-२
११. 'हम और तुम तुम और' गीत वाली फिल्म-२
१२. अभिषेक, भूमिका की फिल्म-२
१४. 'कुछ लोग यहाँ पर ऐसे है' गीत वाली फिल्म-४
१५. मकरंद देशपांडे, शबाना, श्वेता की फिल्म-३
१६. 'जब आती होगी याद मेरी' गीत वाली फिल्म-२
१७. संजय कपूर, माधुरी की फिल्म-२
१९. 'ओ रूपनगर के सौदागर' गीत वाली फिल्म-२
२०. अनिल धवन, रेहाना की फिल्म-२,२
२२. 'पर्दे में रहने दो पर्दा ना' गीत वाली फिल्म-३
२४. सुनील दत्त, साधना की फिल्म-३
२५. 'दिल जंगली कबूतर' गीत वाली फिल्म-३
२६. अभिषेक, उदय, एशा की फिल्म-२
२७. 'शरमाए काहे घबराये' गीत वाली फिल्म-२
२९. आमिर, माधुरी दीक्षित की फिल्म-२
३०. 'लगन लागी मन की लगन' गीत वाली फिल्म-२
३१. फिल्म 'मनोरंजन' में नायिका कौन थी-३
३२. शाहरूख, प्रियंका चोपड़ा की फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. ऋषि, अनिल, श्रीदेवी की फिल्म-४
२. 'नील गगन पे उड़ते बादल आ' गीत वाली फिल्म-४
३. फिल्म 'मि. बॉण्ड' में अक्षयकुमार के साथ नायिका कौन थी-२
४. जीतेंद्र, रीना राय, रामेश्वरी की 'धक धक से धड़कना' गीत वाली फिल्म-२
५. 'सपनों का शहर हो' गीत वाली अरशद वारसी, महिमा चौधरी की फिल्म-३
८. सुष्मिता की पहली फिल्म ?-३
१०. 'चूड़े वाली छमिया मिला नैन रे' गीत वाली सनी, जयाप्रदा की फिल्म-३
१३. विनोद खन्ना, बिन्दू की 'दिल करने लगा है प्यार तुम्हे' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'जीना तेरी बाहों' गीत वाली सुनील शेट्टी, इंद्रकुमार, नम्रता की फिल्म-३
१७. प्रदीपकुमार, नर्गिस की 'दिल की गिरह खोल दो' गीत वाली फिल्म-२,२,२
१८. 'नजर के सामने जिगर' गीत वाली राहुल राय, अनु अग्रवाल की फिल्म-३
१९. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की 'ढपली वाले ढपली बजा' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'गोरी जो मटके बालों' गीत वाली सुनील, रवीना, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३
२३. राजेंद्र कुमार, राखी की 'तुम मेरी हो मेरे सिवा किसी' गीत वाली फिल्म-२,२
२६. 'हर एक घर में दिया' गीत वाली संजय सूरी, रेवती, गुल पनाग की फिल्म-२
२८. सनी, सलमान, करिश्मा, तब्बू की 'अभी साँस लेने की' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 3194

सूडोकु -3195

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -3194 का हल

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5

शब्द पहेली - 3195

बाएँ से दाएँ

1.आदत से मजबूर-4
5.एक वाद्य यंत्र (अंग्रेजी-4)
8.हवा,समीर-3
9.रुष्ट,गुस्सा होना-2
11.सफेद,श्वेत-3
12.हमेशा,सदैव-4
14.मस्तूल, नाव पर बांधा जाने वाला कपड़ा-2
15.सिर्फ,महज-3
17.अनाज का कण-2
19.आधुनिक,नया-5
22.एक प्रकार का मसाला, अजमोदा-5
25.सदैव-2
26.ध्वजा-3
27.अधिकार-2
28.असमकक्ष-4
30.चिलमन,नकाब-3
31.वायु रोग-2
33.नल,टोंटी-3
35.आवश्यकता-4
36.शमशीर-4

ऊपर से नीचे

2.राजनीतिक पार्टी-2
3.नीच,अपराधी-4
4.बिजली कौंधना-5
5.बंदर,मर्कट-3
6.जूं का अंडा-2
7.दक्षता,होशियारी-4
10.उपकार,दया भार-4
13.कुचलना,दबाना-3
16.आमदनी-3
17.मूल्य,कीमत-2
18.वाद्य यंत्र-2
20.बहादुरी-3
21.इस पर रोटी सेंकते हैं-2
22.नाज,नखरा-2
23.उत्तराधिकारी-3
24.आधुनिकता-4
25.झिझकना-5
26.हौसला, ताकत-4
28.शत्रुता,दुश्मनी-4
29.हूर,परी,अप्सरा (उर्दू-3)
32.पेड़,दरख्त-2
34.औषधि-2

शब्द पहेली -3194 का हल

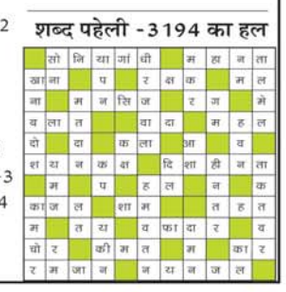

गर्लफ्रेंड की हत्या में आईआरएस अफसर अरेस्ट

अफसर के फ्लैट पर फंदे से लटकी मिली थी भेल की डिप्टी मैनेजर, डेटिंग एप से हुई थी मुलाकात

नोएडा। नोएडा में गर्लफ्रेंड की हत्या के आरोप में आईआरएसअफसर सौरभ मीणा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। शनिवार को सौरभ के फ्लैट में शिल्पा गौतम (37) का शव फंदे से लटका मिला था। शिल्पा, भेल में डिप्टी मैनेजर एचआर थी। दोनों की मुलाकात 3 साल पहले एक डेटिंग एप से हुई थी, तभी से दोनों रिलेशन में थे।

शिल्पा के पिता ने सौरभ पर हत्या कर शव फंदे पर लटकाने का आरोप लगाया। सेक्टर-39 थाने में एफआईआर दर्ज करवाई। शनिवार शाम सौरभ को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

घटना के वक्त घर पर ही थे अफसर

सेक्टर-39 के थाना प्रभारी ने बताया- सौरभ 2016 बैच का आईआरएस अफसर है। वह दिल्ली में इनकम टैक्स विभाग में असिस्टेंट कमिश्नर है। सौरभ मूल रूप से राजस्थान के भरतपुर में नशवारा का रहने वाला है। उसका भाई भी आईएएस अफसर है। सौरभ का सेक्टर-100 के लोट्स बुलेवर्ड सोसाइटी में फ्लैट है। शनिवार शाम 4 बजे उस फ्लैट में एक युवती के सुसाइड की खबर मिली।

पुलिस मौके पर पहुंची तो शिल्पा गौतम नाम की युवती फंदे पर लटकी थी। शुरुआती पूछताछ में सौरभ ने बताया कि उसकी महिला मित्र ने दूसरे कमरे में खुद को बंद कर फांसी लगाई। सोसाइटी की सिक्योरिटी ने कमरे का दरवाजा तोड़ा, तब उनको जानकारी हुई। पुलिस सभी तथ्यों की जांच कर रही है।

पिता बोले- अफसर ने मारकर लटकाया

शिल्पा के पिता ने आरोप लगाया कि सौरभ ने बेटी से शादी का वादा किया था। जब बेटी ने उससे शादी करने के लिए कहा तो उसे मारकर लटका दिया। सौरभ अक्सर शिल्पा के साथ मारपीट और अभद्र व्यवहार करता था।

शिल्पा के एक दोस्त के जरिए मिली सूचना पर उनको जानकारी हुई कि शिल्पा सौरभ के फ्लैट में मरी पड़ी है। एडीसीपी मनीष कुमार मिश्र ने बताया कि मामले में पिता के आरोप पर सौरभ मीणा के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। जांच की जा रही है।

3 साल पहले युवती का हुआ था तलाक

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, शिल्पा गौतम की शादी हो चुकी थी। 2021 में उसने पति से तलाक ले लिया था, तभी से वह सौरव मीणा के संपर्क में आई थी। शादी की बात को लेकर ही वह सौरभ के लोटस बुलेवर्ड समिति के फ्लैट में गई थी। वहां दोनों के बीच झगड़ा हुआ। फिर वह दूसरे कमरे में चली गई। काफी देर तक कमरा नहीं खुला तो सौरभ ने सिक्योरिटी को फोन किया। सिक्योरिटी वालों ने पुलिस को फोन किया।

नोएडा पुलिस ने रेड लाइट पर लगाया ग्रीन नेट

गौतम बुद्ध नगर। इस समय लगातार भीषण गर्मी पड़ रही है और तापमान 45 के पार जा चुका है। हीट वेव के चलते लोग घरों से कम बाहर निकल रहे हैं। अब ऐसे में नोएडा पुलिस ने भी लोगों को गर्मी से निजात दिलाने के लिए नई पहल की है। नोएडा पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह के दिए गए निर्देशों के क्रम में ट्रैफिक पुलिस ने एक नई पहल की है। इसके अंतर्गत ऐसे चौराहों, जहां पर दोपहियां वाहनों की संख्या बहुत अधिक है और रेड लाइट पर बहुत देर तक रुकना पड़ता है। ट्रैफिक दबाव के कारण उनको भीषण गर्मी से राहत दिलाने के लिए चौराहों व रेड लाइट के पास ग्रीन नेट की व्यवस्था की जा रही है।

भीड़भाड़ वाले चौराहों पर होगी व्यवस्था

इससे रेड लाईट व यातायात ठहराव के दौरान यातायात पुलिस कर्मी व आमजन सीधी धूप के सम्पर्क में आने से बचे रहे हैं व उनके स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव न पड़े। यातायात पुलिस द्वारा एनएसईजेड चौराहे के पास इस प्रकार का ग्रीन नेट लगवाया गया है और शीघ्र ही अन्य महत्वपूर्ण व भीड़भाड़ वाले चौराहों पर इस तरह का ग्रीन नेट लगवाया जायेगा।

शार्ट न्यूज

20 साल सजा काटकर आए व्यक्ति ने किया सुसाइड

नोएडा। नोएडा में एक व्यक्ति ने रविवार देर रात अपने घर के कमरे में पंखे से फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया। मृतक के पास से पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस सुसाइड के कारणों की जांच कर रही है। सेक्टर-24 थाना प्रभारी ने बताया कि सोमवार को पुलिस को सूचना मिली कि सेक्टर-52 में 40 साल के व्यक्ति शालू उर्फ सल्लू ने अपने घर पर कमरे में फंदा लगाकर सुसाइड कर ली। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। परिजनों से जानकारी करने पर पता चला कि शालू पंजाब में हत्या के एक मामले में हाल ही में 20 साल की सजा काटकर लुधियाना जेल से लौटा था। शख्स की मौत के बाद उसके घरवालों के बीच मातम पसरा हुआ है। स्थानीय लोगों ने बताया कि पंजाब के लुधियाना में हुए एक हत्याकांड में 20 साल की सजा शालू को हुई थी। वह 20 साल से जेल में बंद था और दस दिन पहले ही उसकी रिहाई हुई थी। जेल से आने के बाद वह डिप्रेशन में रहने लगा था। वह आसपास के लोगों और परिवार के सदस्यों से कम ही बात करता था। पुलिस सुसाइड के कारणों की जांच कर रही है। शालू के सुसाइड की वजह पुलिस के लिए पहेली बनी हुई है। इस संबंध में पुलिस ने मृतक के घर के सदस्यों और रिश्तेदार से भी पूछताछ की है।

लिव इन में रह रही महिला की मौत

मोदीनगर। मोदीनगर की जगतपुरी कॉलोनी में महिला राखी की हुई संदिग्ध मौत के मामले में पुलिस ने प्रेमी जीजा सहित चार के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग को लेकर परिजनों ने मोदीनगर थाने पर हंगामा भी किया। पुलिस जांच के बाद आगे की कार्रवाई करने की बात कह रही है। कस्बा पतला निवासी कृष्णपाल सिंह की 28 वर्षीय पुत्री राखी काफी समय से मोदीनगर की जगतपुरी कॉलोनी में अपने जीजा विश्वास उर्फ गुड्डू के साथ लिव इन में रह रही थी। राखी का शव अपने कमरे में पड़ा मिला। सूचना पर मौके पर पहुंचे परिजनों ने हत्या करने का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा किया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। मृतका के भाई अमित कुमार ने इस संबंध में मोदीनगर थाने में तहरीर दी थी। सोमवार को मृतका के परिजन एकत्र होकर मोदीनगर थाने में पहुंचे और जमकर हंगामा किया। परिजनों का आरोप कि पुलिस आरोपियों के पक्ष में काम कर रही है। हंगामा बढ़ता देखकर थानाप्रभारी लोगों के बीच पहुंचे और निष्पक्ष जांच करने का आश्वासन दिया। एसीपी ने बताया कि तहरीर के आधार पर विश्वास ,उसकी पत्नी रीना ,बहन काजल व सचिन निवासी जगतपुरी कॉलोनी के खिलाफ हत्या की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। जांच के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बॉयोलॉजी के लिए आए दोगुना आवेदन

नोएडा। छात्रों के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से संबद्ध सरकारी कॉलेज में दाखिले की राह मुश्किल होने जा रही है। पिछले कुछ दिनों में आवेदन करने वाले छात्रों का आंकड़ा बढ़ गया है। एक-एक सीट के लिए चार से पांच आवेदन आए हैं। इस बार बीएसी गणित में छात्रों की रुचि बढ़ती हुई दिख रही है। अकेले राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 30 सीटों के लिए अब तक 132 से ज्यादा आवेदन आ गए हैं। जबकि अभी दाखिले की प्रक्रिया चलेगी। वहीं, निजी कॉलेज में बहुत कम आवेदन आ रहे हैं। उनके लिए सीट भरना तक मुश्किल हो गया है। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से संबद्ध 47 कॉलेज हैं। इसमें दाखिले के लिए 25 अप्रैल से आवेदन की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। जिले में दो सरकारी, एक विश्वविद्यालय का संगठन महाविद्यालय और एक अर्द्धसरकारी कॉलेज है। निजी कॉलेज से ज्यादा छात्र सरकारी कॉलेज के लिए आवेदन कर रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार, सबसे ज्यादा छात्र बॉयोलॉजी में रुचि दिखा रहे हैं। बादलपुर कॉलेज में दोनों में निर्धारित 30 सीटों के लिए बॉयोलॉजी के लिए 144 और गणित के लिए 57 आवेदन आए हैं। सेक्टर- 39 स्थित राजकीय स्नातकोत्तर में 30 सीटों में बॉयोलॉजी के लिए 132 और गणित के 57 छात्रों के आवेदन आए हैं।

दिल्ली के दो वाहन चोर लोनी में गिरफ्तार

लोनी। दिल्ली एनसीआर के अलग-अलग इलाकों में वाहन चोरी करने वाले गिरोह के दो सदस्यों को लोनी पुलिस ने बस डिपो के पास दबोच लिया। इनसे चोरी की छह बाइक बरामद की हैं। दोनों चोरी के वाहनों को बेचने के लिए अलग-अलग तरह के बहाने बनाते थे। एसीपी अंकुर विहार भास्कर वर्मा ने बताया कि निखिल निवासी जौहरीपुर और शाहनवाज निवासी चांदबाग भजनपुरा दिल्ली को गिरफ्तार किया। दोनों के खिलाफ यूपी और दिल्ली के अलग-अलग थानों में 16 मुकदमे दर्ज हैं। इनकी निशानदेही लाल बाग किकर के पास से चोरी के वाहन बरामद किए हैं। दोनों ने पूछताछ में बताया कि वे दिल्ली-एनसीआर के इलाके में वाहन चोरी करते हैं। वाहनों को अपनी तथा अपने पारिवारिक जनों की बीमारी का बहाना बनाकर और खुद को असहाय बताकर राहगीरों को बेच देते थे। निखिल पर गाजियाबाद के विभिन्न थानों पर वाहन चोरी के तीन, दिल्ली के थानों पर सात मुकदमे दर्ज हैं जबकि शाहनवाज के खिलाफ गाजियाबाद के कई थानों पर वाहन चोरी के चार और दिल्ली में दो मुकदमे दर्ज है।

दनकौर ईओ के निलंबन की संस्तुति का यीडा ने शासन को भेजा पत्र

ग्रेटर नोएडा। अधिसूचित जमीनों पर अवैध कालोनियों और निर्माणों को रोक पाने में नाकाम यमुना एक्सप्रेस वे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (यीडा) ने अब नगर पंचायतों के अधिशासी अधिकारी को निशाने पर लिया है। दनकौर में अधिसूचित जमीन पर नगर पंचायत की ओर से नक्शा स्वीकृत करने के मामले में अधिशासी अधिकारी (ईओ) के निलंबन की संस्तुति के साथ शासन को पत्र भेजा है। साथ ही ईओ के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने की भी तैयारी है। उधर, जहांगीरपुर, रबूपुरा और दनकौर में 300 से ज्यादा अवैध निर्माण भी चिह्नित किए गए हैं, मगर कार्रवाई की जगह यीडा के अधिकारी कागजी खेल में ही जुटे हैं। यमुना अथॉरिटी की अधिसूचित जमीनों और नगर पंचायतों की सीमा में महज एक से डेढ़ मीटर का ही अंतर है। ऐसे में दनकौर के साथ ही अन्य नगर पंचायतों ने यीडा की अधिसूचित जमीनों पर कालोनी बसाने के लिए बकायदा सरकारी फीस जमाकर नक्शा स्वीकृत कर दिया है। उधर, इन्हीं चिह्नित जमीनों पर यमुना प्राधिकरण भी भूखंड योजना की तैयारी में है। मगर, इससे पहले ही यहां जमीनों की बिक्री आदि होने से योजना की बाधाएं बढ़ सकती हैं। उधर, अधिसूचित जमीनों पर अवैध कालोनी के विकसित होने की जानकारी के बावजूद प्राधिकरण के अधिकारी मौके पर भी नहीं गए हैं।

गाजियाबाद में एनटीएफ ने पकड़ा एक क्विंटल से अधिक गांजा

गाजियाबाद। गाजियाबाद में एएनटीएफ की मेरठ शाखा ने एक क्विंटल से अधिक गांजा बरामद किया है। साथ ही एक स्विफ्ट कार भी पकड़ी है। जिससे इस गांजे की तस्करी हो रही थी। गांजा उड़ीसा से लाया गया था और दिल्ली सप्लाई होना था। तस्करों का नेटवर्क इतना तेज है कि आगे सप्लाई करने वाले लोग आपस में परिचित नहीं है। एएनटीएफ के मेरठ शाखा के डीएसपी राजेश कुमार सिंह ने बताया की पुलिस को सूचना मिली की भारी संख्या में गांजे की तस्करी होनी है। इस पर पुलिस ने जाल बिछाया और गाजियाबाद के थाना खोड़ा क्षेत्र से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए व्यक्ति का नाम प्रवेश कुमार है जो की बुलंदशहर का रहने वाला है। प्रवेश ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसको यह गांजा लोकेंद्र शर्मा जो अलीगढ़ का निवासी है उसने दिया था। गांजा उड़ीसा से आ रहा था और दिल्ली सप्लाई होना था। प्रवेश से एक स्विफ्ट कार भी बरामद हुई है जिसमें यह गंजा की तस्करी कर रहा था। राजेश कुमार सिंह ने बताया कि तस्करों का नेटवर्क कितना तेज है कि वह आगे सप्लाई चैन के लोगों को एक दूसरे से जानने या मिलने नहीं देते हैं। प्रवेश को इस डिलीवरी के 50 हजार रुपए मिलने थे।

गुजरात हादसे के बाद नोएडा में अलर्ट

मॉल में बने गेम जोन में जॉइंट टीम ने दो दिन किया निरीक्षण

एजेंसी

नोएडा। गुजरात के राजकोट हादसे में 27 लोगों की मौत के बाद नोएडा जिला प्रशासन और पुलिस विभाग अलर्ट पर है। सोमवार को अग्निशमन , बिजली, जीएसटी और मनोरंजन विभाग की जॉइंट टीम ने अभियान चलाया।

ये अभियान दो दिन तक रहेगा। इस दौरान नोएडा ग्रेटरनोएडा के गेम जोन में सुरक्षा के मानकों साथ आग से निपटने के पूरे इंतजाम चेक किए गए।

सीएफओ प्रदीप कुमार के देखरेख में शहर के सभी गेमिंग जोन में सुरक्षा व फायर सेफ्टी को चेक किया। यहां जब टीम पहुंची तो मॉल्स में लोगों और बच्चो की गेम जोन में काफी भीड़ दिखी। लोग कतार लगाकर टिकट खरीद रहे थे और कुछ बारी का इंतजार कर रहे थे। ई-गेम पर बच्चों की भीड़ ज्यादा थी और आसपास परिजन खड़े थे। इसके अलावा बॉलिंग ऐली, 7डी, वीआर गेम, एडवेंचर पार्क, ई-कार आदि के जोन में भी काफी भीड़ थी।

प्रदीप कुमार ने बताया कि गेम जोन में कुछ कमियां पाई गई। जैसे भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कहा गया।

फायर सेफ्टी उपकरण ठीक थे। यहां स्पेस और इमरजेंसी के दौरान होनी वाली सुरक्षा की जानकारी लोगों को दी गई। जिनको ठीक करने के लिए कहा गया।

उन्होंने कहा कि ये कदम इसलिए उठाया गया कि राजकोट में गेम जोन में लगी आग में जो लोगों की मौत हुई है, वैसी पुनरावृत्ति यहां ना हो। उन्होंने कहा कि अगर कुछ कमियां पाई जाती हैं उन संचालकों के खिलाफ हम एफआईआर भी करेंगे और उनको बंद भी करायेगे।

शारदा विश्वविद्यालय का छात्र हॉकी स्केटिंग टीम में चुना गया

गौतम बुद्ध नगर। ग्रेटर नोएडा के नॉलेज पार्क स्थित शारदा विश्वविद्यालय के बीटेक चतुर्थ वर्ष के सीएसई छात्र नईमुर रहमान को इटली में होने वाली वर्ल्ड स्केट्स गेम्स में पहली बार भारतीय सीनियर पुरुष रोलर हॉकी स्केटिंग टीम में चुना गया है। विश्वविद्यालय के प्रो वाइस चांसलर डॉ परमानंद ने बताया कि भारत के विभिन्न राज्यों से 12 खिलाड़ियों को चुना गया। 27 अगस्त से 23 सितंबर से चलने वाले इस गेम में 16 टीमें हिस्सा लेंगी। 1 जून 2024 से 6 जुलाई तक जोधपुर राजस्थान में पहले प्रशिक्षण शिविर में भाग लेंगे और दूसरे शिविर की तारीखें जल्द ही घोषित की जाएंगी। आरएसएफआई ने इटली के विदेशी कोचों की देखरेख में कोचिंग और प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के डायरेक्टर पीआर डॉ अजीत कुमार ने कहा कि बेहद खुशी और गर्व का क्षण है की हमारे छात्र विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रहे हैं। नईमुर रहमान भारतीय रोलर हॉकी स्केटिंग टीम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

नोएडा में भीषण गर्मी से लोग परेशान

हीट स्ट्रोक के लिए अस्पताल में 30 बेड रिजर्व, हाइड्रेट करने के लिए पीएं तरल पदार्थ

नोएडा। नोएडा में गर्मी बढ़ने और लू चलने से लोगों की परेशानी बढ़ने लगी है। आईएमडी के मुताबिक सोमवार को तेज गर्मी पड़ेगी। सुबह 11 बजे तक ही तापमान 41 डिग्री तक जा सकता है। इसके बाद दोपहर ढाई बजे तक 46 डिग्री तक जाएगा। 29 मई तक हीट वेव जारी रहेगी।

जिला प्रशासन ने एडवाइजरी जारी की है। बहुत ज़रूरी काम होने पर ही घर से बाहर निकले। इसके साथ अस्पतालों में हीट वेव को लेकर बेड रिजर्व कर दिए गए है।

आईएमडी के मुताबिक मौसम साफ रहेगा। हवा की रफ्तार सात से 5 किमी प्रतिघंटा रहेगी। इससे गर्मी और तेज लगेगी।

29 मई तक रेड अलर्ट यानी हीटवेव जारी रहेगी। हालांकि हल्के बादल छाएंगे। चार दिन भीषण गर्मी पड़ने की संभावना है। ऐसे में लोग सावधानी बरते।

रिपोर्ट के मुताबिक 3 दिन अधिकतम तापमान 46 डिग्री और न्यूनतम तापमान 31 डिग्री तक रहेगा। धूप के साथ लू चलेगी। इससे लोगों

को तेज गर्मी का एहसास होगा। इसके बाद तापमान में अधिकतम तापमान में 3 डिग्री तक की गिरावट दर्ज की जाएगी।

हीट स्ट्रोक के मरीजों के लिए अस्पताल में 30 बेड किए गए रिजर्व

जिला अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में हीट स्ट्रोक के मरीजों के लिए तीस बेड आरक्षित किए गए हैं। जिला अस्पताल में छह और अलग अलग छह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर चार-चार बेड आरक्षित रहेंगे। ताकि जरूरत पड़ने पर मरीजों का इलाज किया जा सके।

जिला अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) पर भर्ती होने वाले इन मरीजों को एअरकंडीशनर या एयर कूलर की सुविधा मिलेगी। जिला अस्पताल में पहले से ही सेंट्रलाइज एसी है। वहीं सीएचसी में इस तरह की सुविधा नहीं है। लिहाजा यहां एयर कूलर लगाए गए हैं।

इमरजेंसी वार्ड में भर्ती के बाद भेजा जाएगा स्पेशल वार्ड

इसके अलावा मरीजों को ओआरएस, पानी की बोतल सहित कई अन्य सुविधाएं मिलेगी। इन मरीजों को पहले आपातकालीन विभाग में भर्ती कर पहले सभी जरूरी जांच के बाद ही हीट स्ट्रोक वार्ड में शिफ्ट किया जाएगा। हीट स्ट्रोक की स्थिति नहीं होने पर सामान्य वार्ड में ही इलाज किया जाएगा।

स्वास्थ्य विभाग के पब्लिक हेल्थ एक्सपर्ट डॉ. अमित कुमार ने बताया कि हीट स्ट्रोक के मरीजों की बेहतर देखभाल के लिए यह व्यवस्था की गई है। ताकि मरीज का सही इलाज हो सके। अभी हीट स्ट्रोक के मरीज नहीं हैं।

यूपीकेएल कबड्डी लीग की औपचारिक घोषणा

11 से 25 जुलाई तक होंगे मुकाबले, 8 टीम लेगी हिस्सा 10 जून को खिलाड़ियों की नीलामी

नोएडा। यूपी कबड्डी एसोसिएशन के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश कबड्डी लीग(यूपीकेएल) का पहला सीजन 11 से 25 जुलाई तक होगा। मुकाबले नोएडा के इनडोर स्टेडियम में खेले जाएंगे। यह घोषणा आज सेक्टर 27 स्थित एक होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए यूपीकेएल के संस्थापक संभव जैन और एकेएफआई के संयुक्त सचिव और उत्तर प्रदेश कबड्डी एसोसिएशन के सदस्य विनय कुमार सिंह ने की।

आठ टीम लेगी हिस्सा

संभव जैन ने कहा हम इस प्रतिष्ठित लीग को लेकर रोमांचित हैं। हमारा लक्ष्य कबड्डी को बढ़ावा देना और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अपना कौशल दिखाने के लिए एक मंच प्रदान करना है। उन्होंने ने बताया

कि लीग में कुल 8 टीमें हिस्सा लेंगी। जिनमें यमुना योद्धा, नोएडा निन्जा, काशी किंग्स, अवध रामदूत, ब्रिज स्टार्स, संगम चैलेंजर्स, अयोध्या वॉरियर्स और गंगा किंग्स ऑफ मिर्जापुर शामिल हैं।

एक टीम में 15 खिलाड़ी होंगे, जिसमें पूरे उत्तर प्रदेश और भारत के अन्य क्षेत्रों से कुल 120 प्रतिभागी शामिल होंगे। संभव जैन ने बताया कि यूपीकेएल ने राष्ट्रीय प्रसारण भागीदार के रूप में सोनी स्पोर्ट्स के साथ साझेदारी की है, जिसका मकसद कबड्डी को भारत के हर कोने में पहुंचाना है। इससे इस खेल के प्रशंसकों में बढ़ोतरी होगी।

10 जून को होगी खिलाड़ियों की नीलामी

यूपीकेएल के स्पोर्ट्स ऐंबैस्डर राहुल चौधरी ने कहा कि यह प्रतियोगिता कबड्डी खिलाड़ियों के लिए पेशेवर स्तर पर प्रदर्शन और अनुभव हासिल करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। विनय कुमार सिंह ने बताया कि यूपीकेएल मेगा नीलामी 10 जून 2024 को नोएडा के सरोवर होटल में निर्धारित है। जहां खिलाड़ियों की नीलामी की जाएगी।

यूपीकेएल ट्रॉफी टूर 2024 की रूपरेखा भी तैयार की गई है। जिसके तहत 20-25 दिनों के समय में ट्रॉफी को उत्तर प्रदेश के 20 से अधिक प्रमुख शहरों में प्रदर्शित किया जाएगा। इनमें प्रमुख रूप से लखनऊ, अयोध्या, वाराणसी, मिर्जापुर, प्रयागराज, झांसी, आगरा, मथुरा, नोएडा जैसे शहर शामिल हैं। यह कार्यक्रम युवाओं में कबड्डी के प्रति जागरूकता और उत्साह पैदा करने के लिए बनाया गया है।

लोन चुकाने के बाद भी बेच दिए तीन वाहन

नोएडा। लोन चुकाने के बाद भी ट्रैवल्स कंपनी के तीन वाहन बेचने पर आपत्ति जताते हुए महिला ने नोबल कोआपरेटिव बैंक और उप संभागीय परिवहन अधिकारी के खिलाफ सेक्टर-24 थाने में मामला दर्ज कराया है।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायतकर्ता ने नोबल कोऑपरेटिव बैंक और संभागीय परिवहन अधिकारी पर साठगांठ कर वाहनों को लोन का सारा बकाया पैसा जमा करने के बाद भी बेचने का आरोप लगाया है।

आकाश टूर एंड ट्रवेल्स कंपनी की संचालक पंकज चौहान ने शिकायत की है कि 22 फरवरी 2018 को उन्होने ने दो बस और एक कार के लिए सेक्टर-22 स्थित नोबल कोऑपरेटिव बैंक की मुख्य शाखा से 58.40 लाख रुपये का लोन कराया। मार्च 2020 तक शिकायतकर्ता लोन की हर किस्त समय पर जमा करती रहीं। इसके बाद कोरोना महामारी के दौरान पंकज को ट्रांसपोर्ट के कारोबार में काफी नुकसान हो गया और वह बैंक वालों को मासिक किस्त देने में विफल रहीं। अक्टूबर 2020 में बैंक वालों ने शिकायतकर्ता की कार अपने कब्जे में ले ली। इसके बाद 15 जून 2022 को शिकायतकर्ता ने एक मुश्त सेटेलमेंट के लिए बैंक वालों को पत्र लिखा।

आरोप है कि जून 2023 में बैंक वालों ने संभागीय परिवहन अधिकारी से साठगांठ कर दोनों बसें अपने नाम करवा ली। कार अभी भी बैंक वालों के कब्जे में है। आरोप है कि बैंक वालों ने 21 नवंबर 2023 को शिकायतकर्ता की दोनों बसें बिना किसी पूर्व सूचना के बेच दी।

ऑडी कार ने बुजुर्ग को उड़ाया, 10 मीटर दूर गिरे

नोएडा। नोएडा में बेकाबू ऑडी कार की टक्कर से बुजुर्ग की मौत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बुजुर्ग हवा में लहराते हुए करीब दस मीटर दूर जाकर गिरा। करीब दो मिनट का हादसे का वीडियो सामने आया है। जो कि 26 मई का बताया जा रहा है। मृतक के बेटे ने अज्ञात चालक के खिलाफ सेक्टर-24 थाने में शिकायत दी है। वीडियो में दिख रहा है कि एक बुजुर्ग पैदल ही जा रहा है। थोड़ी ही देर बाद एक तेज रफ्तार ऑडी कार बुजुर्ग की तरफ आते हुए दिखती है। कार चालक सामने आ रहे बुजुर्ग को टक्कर मार देता है। बुजुर्ग काफी देर तक हवा में लहराते हुए जमीन पर

गिरता है। और उसकी मौके पर ही मौत हो जाती है। सिर के बल गिरने से बुजुर्ग ने तुरंत ही दम तोड़ दिया है। वीडियो घटनास्थल के आसपास स्थित दुकानों और घरों में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुआ है। जबकि सामने से दो महिलाएं आती दिखती हैं। जो भागकर जान बचाती हैं।

नोएडा में लगाए जाएंगे 82 हजार वाटर मीटर

दो महीने में शुरू होगा काम, यूनिट के हिसाब से आएगा बिल

एजेंसी

नोएडा। नोएडा वासियों को प्रति यूनिट की दर से पानी का बिल देना होगा। इसके लिए शहर में वाटर मीटर लगाए जाने है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत 5000 वाटर मीटर लगाने का काम पूरा हो चुका है। अगले महीने से 82 हजार वाटर मीटर लगाने का काम होगा।

इसके लिए कंपनी का चयन किया जाएगा। इसके बाद बनाए गए जल एप में ऑन लाइन बिल भरने का प्रावधान भी होगा। इसके लिए जल्द ही प्रति यूनिट दर तय की जाएंगी।

नोएडा में वर्तमान में भूखंड के साइज के हिसाब से पानी की बिल

लिया जाता है। अब नए सिस्टम में वाटर मीटर लगाए जा रहे है। इसमें प्रति यूनिट के हिसाब से पानी का बिल लिया जाएगा। यूनिट दर के लिए दिल्ली और हरियाणा की पॉलिसी को भी देखा गया। लेकिन वहां की फिजिकल आबादी और नोएडा की आबादी में अंतर है। यहां अधिकतर सेक्टर और सोसाइटी है। इसलिए वहां का मॉडल यहां अप्लाय नहीं किया जा सकता। नोएडा के लिए अलग मॉडल तैयार होगा। ये अपने आप में प्रदेश में भी पहला मॉडल होगा।

प्राधिकरण ने बताया कि नोएडा में ये मानकर चलते है चार से पांच लोगों का एक परिवार है। रोजाना करीब 200 लीटर पानी प्रयोग करता है। इसी तरह सोसाइटी में जिसके फ्लैट है और कितना पानी यहां रोजाना यूज हो रहा है इसकी एक गणना की जा रही है।

ये गणना यूजीआर से रोजाना सप्लाई किए गए पानी से होती है। इसी आधार पर एक मानक तय हो जाएगा कि इस सोसाइटी में कितना पानी रोजाना यूज हो रहा है। कितना बिल सोसाइटी वाले दे रहे है। इन सभी के आधार पर ही प्रति यूनिट दर तय की जाएगी।

बिल जमा करने की जिम्मेदारी एओए की होगी। वह चाहे तो मेंटेनेंस में इसे जोड़ सकता है ये उसकी जिम्मेदारी है।

जिन सोसाइटी में एओए नहीं बनी है और जहां सोसाइटी बिल्डर के पास है वहां बिल्डर की जिम्मेदारी होगी पानी का बिल जमा करने की।

इसी तरह नोएडा के सेक्टरों में पानी की प्रति यूनिट दर तय होगी। बताया गया कि इंडस्ट्री, कॉमर्शियल और इंस्टीट्यूशनल के लिए अलग-अलग दर होंगी।

गोरखपुर में बेटे ने मां-बाप को मार डाला

हैंडपंप के हैंडल से सिर पर किए कई वार, पत्नी को भी मारने की कोशिश

गोरखपुर (गोला)। गोरखपुर में नशेड़ी बेटे ने सोते वक्त अपने बुजुर्ग मां-बाप की हत्या कर दी। रविवार रात को हैंडपंप के हैंडल से सिर पर हमला कर दिया। इससे दोनों की मौत हो गई। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मामला गोला थाना क्षेत्र के फत्तेपुर गांव की है।

फत्तेपुर के दलित बस्ती के रहने वाले राजपति (75) व पत्नी मुराती देवी (70) के तीन बेटे रामाशीष (50), शिवशंकर (45) व दयानंद (42) हैं। दो बेटे रामाशीष व शिव

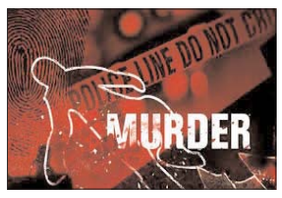

शंकर परिवार के साथ मुंबई में रहते हैं। जबकि छोटा बेटा दयानंद गांव में ही परिवार के साथ रहता है।

चाचा की शादी में आए थे दोनों बेटे

चाचा के बेटे की शादी में दोनों परिवार के साथ गांव आए थे। रविवार यानी 26 मई को परिवार के सभी पुरुष बारात में गए थे। जबकि दयानंद घर पर ही रूक गया। रात में करीब 12 बजे दयानंद कहीं से आया और हैंडपंप के हैंडल से सोते समय अपनी मां और पिता सिर में कई वार कर दिए।

फिर दयानंद अपनी पत्नी चंदा (40) की भी हत्या करने के नीयत से खोजते हुए छत पर पंहुचा। यहां अपनी भाभी अमला देवी पत्नी शिवशंकर को जगा देखकर हैंडपंप के हैंडल को सीढ़ी पर फेंककर फरार हो गया। अमला ने जब आकर देखा तो सास-ससुर के सिर से खून बह रहा था।

महिलाओं ने हत्या की सूचना अपने परिवार के लोगों को दी। देखने पर पता चला की बुजुर्ग मुराती देवी की मौत हो गई थी और राजपति की सांस चल रही थी। बुजुर्ग को इलाज के लिए बड़हलगंज के एक निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों उन्हें भी मृत घोषित कर दिया गया।

परिजनों ने इसकी सूचना 112 नंबर पुलिस को तकरीबन 4 बजे दी। इसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

गोरखपुर में मजदूर की पीट-पीटकर हत्या

गोरखपुर। गोरखपुर में एक मजदूर की की बेरहमी से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। मृतक झंगहा इलाके के कोल्हुआ गांव में शिव मार्का ईंट-भट्ठे पर काम करता था। रविवार की रात ईंट-भट्ठे पर काम करने वाले मजदूरों में किसी बात को लेकर आपस में विवाद हो गया। जिसके बाद मजदूरों ने राम अधार (45) पिटाई कर दी। जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने मृतक राम अधार की पत्नी सावित्री की तहरीर पर देवरिया जिले के बरहज इलाके के पलिया निवासी मजदूर कंचन और शिवा के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया है। पुलिस एक आरोपी को हिरासत लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। दरअसल, देवरिया के मदनपुर कोरया गांव निवासी राम आधार यहां झंगहा इलाके के कोल्हुआ गांव में मोतीलाल यादव के शिव मार्का ईंट-भट्ठे पर काम करता था। उसके साथ उसकी पत्नी सावित्री देवी और बेटी सिंपी भी यहीं रहकर मजदूरी करती हैं। रविवार की रात किसी बात को लेकर राम आधार का वहां काम करने वाले कुछ मजदूरों से विवाद हो गया। कहासूनी से शुरू हुआ विवाद कुछ ही देर में मारपीट में तब्दील हो गई। आरोप है? कि कई मजदूर मिलकर राम आधार की पिटाई करने लगे। पिता की पिटाई होता देख बेटी सिंपी ने देख भी लिया। वह दौड़ी हुई अपनी मां सावित्री के पास गई और घटना की जानकारी दी।

शार्ट न्यूज

आगरा में ट्रेन के सामने कूदी महिला

आगरा। आगरा के राजा मंडी रेलवे स्टेशन पर सोमवार सुबह महिला ने केरला एक्सप्रेस के सामने कूदकर सुसाइड का प्रयास किया। महिला को गंभीर हालत में एसएन मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। बताया गया है कि महिला लिव-इन में रह रही थी। उसकी प्रेमी के साथ किसी बात को लेकर स्टेशन पर झगड़ा हुआ। तभी ट्रेन आती देखकर महिला ने प्लेटफॉर्म से छलांग लगा दी। महिला ट्रेन और प्लेटफॉर्म के बीच फंसकर करीब 100 मीटर तक रगड़ती हुई चली गई। फिर ट्रेन रुकी तो उसे निकाला गया। स्ट्रेचर पर लेकर जीआरपी तुरंत एंबुलेंस से हॉस्पिटल के लिए दौड़ी। डॉक्टर ने उसकी हालत गंभीर बताई है। सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा कि आज यानी 27 मई की सुबह करीब 11: 08 बजे महिला और उसके साथ एक युवक प्लेटफॉर्म नंबर एक पर आए। यहां पर महिला का युवक के साथ किसी बात पर विवाद हो गया। महिला ने युवक से कहा कि वो सुसाइड कर लेगी। इसके बाद वो प्लेटफॉर्म से रेलवे ट्रैक पर कूदकर खड़ी हो गई। रेलवे ट्रैक पर खड़े होने के बाद भी वह युवक से बहस करती दिखी। इसी बीच ग्वालियर की ओर से दिल्ली की तरफ जाने वाली केरला एक्सप्रेस आ गई। ट्रेन चालक ने महिला को खड़ा देख हॉर्न दिया। हॉर्न सुनकर महिला युवक से बात करते हुए बचने के लिए प्लेटफॉर्म की ओर भागती है, लेकिन इसी बीच वो ट्रेन की चपेट में आ गई।

नशीली दवाओं के साथ युवक गिरफ्तार

महराजगंज। महराजगंज में इंडो नेपाल बार्डर पर तैनात 22वीं बटालियन के एसएसबी व लक्ष्मीपुर खुर्द चौकी पुलिस संयुक्त टीम ने जांच के दौरान लक्ष्मीपुर खुर्द गांव के पास से एक संदिग्ध युवक के कब्जे से भारी मात्रा में अवैध नशीली दवाओं की खेप बरामद की है। बताया जा रहा है की सीमावर्ती क्षेत्र में सक्रिय ड्रग तस्करों का कैरियर नशीली दवाओं को भारतीय सीमा क्षेत्र से नेपाल राष्ट्र ले जाने की फिराक में था। प्रतिबंधित दवाओं में एनआरएक्स प्रॉक्सीस्पास 2136 कैप्सूल व स्पासप्रोक्स 480 कैप्सूल बरामद हुआ। पूछताछ के दौरान पकड़े गए युवक ने अपना नाम सैफ रजा पुत्र स्व. मोहम्मद तारीफ निवासी ग्राम चुनवटिया, थाना महराजगंज बताया है। बरामदगी व गिरफ्तारी करने वाली संयुक्त टीम में एसएसबी के सहायक कमांडेंट सफवान एन, इंस्पेक्टर जयंता घोस, जितेंद्र कुमार, मुन्ना कुमार, प्रदीप सिंह व चौकी पुलिस के इंचार्ज ब्रह्म कुमार उपाध्याय, अजीत यादव, पवन गिरी शामिल रहे हैं। इस संबंध में कोतवाली प्रभारी नीरज राय ने बताया की नशीली दवाओं के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है। जिसके विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्रवाई हेतु न्यायालय से चालान कर दिया गया है।

संदिग्ध परिस्थितियों में लगी आग

सुलतानपुर। सुल्तानपुर में मोतिगरपुर थानाक्षेत्र के बेलहरी चौकी अंतर्गत नटवा (बेलहरी) गांव में आवासीय छप्पर में आग लग गई। जिसमें तीन भाइयों का गृहस्थी का सारा सामान जलकर राख हो गया। वहीं आग की चपेट में आने से भाई-बहन झुलस गए। लेखपाल ने मौके पर पहुंचकर क्षति का आकलन किया है। मोतिगरपुर थाना क्षेत्र नटवा बेलहरी निवासी मनोज के बेटे रवि का सोमवार को तिलकोत्सव कार्यक्रम था। जिसकी तैयारी घर पर चल रही थी। रविवार की रात भोजन के बाद परिजन रिश्तेदारों के साथ बाहर सोने की तैयारी कर रहे थे। देर रात अज्ञात कारणों से रामदास के आवासीय छप्पर में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने मनोज और राम कुमार के घर को भी अपनी चपेट में ले लिया। परिजन ग्रामीणों की मदद से आग बुझाने में जुट गए। घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद किसी तरह आग पर काबू पाया जा सका। इस बीच बकरी बचाने के चक्कर में आग की चपेट में आने से भाई-बहन रवि (25 वर्ष) और बहन कुसुम (12 वर्ष) झुलस गए। जिनका निजी अस्पताल में इलाज करवाया जा रहा है। अग्निकांड में एक बाइक, चार साइकिल, एक ट्राई साइकिल सहित गृहस्थी का लाखों का सामान जल गया। क्षेत्रीय लेखपाल राम मिलन मौर्या ने आग से हुई क्षति का आकलन कर रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को प्रेरित की है।

शाहजहांपुर में पार्क में लटका मिला शव

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुबह टहलने निकलने से पहले उसने परिवार वालों से कुछ भी नहीं कहा था। शव लोगों ने एक पार्क में पेड़ पर लटका देखा। सूचना के बाद पुलिस और परिजन मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को फंदे से उतारकर परिवार से पूछताछ की। परिजनों ने कोई आरोप नहीं लगाया है। उन्होंने बताया कि वह शराब पीने के आदी थे। अक्सर सुबह में परिवार को बताकर टहलने जाते थे, लेकिन उन्होंने आज परिवार से कुछ भी नहीं कहा। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना सदर बाजार के चिनौर मोहल्ले में रहने वाले 45 साल के कमलेश कुमार सोमवार सुबह परिवार को कुछ बताए बगैर टहलने निकले थे। उसके कुछ देर बाद स्थानीय लोगों ने परिवार को सूचना दी कि कमलेश का शव एक पार्क में पेड़ पर लटका मिला है। सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंच गए। शव देखकर परिवार में कोहराम मच गया। सूचना के बाद सदर थाने की पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। उन्होंने परिजनों से आत्महत्या करने का कारणों को जानने के लिए पूछताछ की, लेकिन परिवार ने किसी तरह का कोई आरोप नहीं लगाया। मृतक की पत्नी मीरा ने बताया कि, कमलेश कुमार खेतीबाड़ी करते थे। अक्सर सुबह जब टहलने जाते थे तो बता देते थे।

जेल लिपिक के घर हुई चोरी का खुलासा

फर्रुखाबाद। फर्रुखाबाद में 21 मई को सेंट्रल जेल के लिपिक के घर का ताला तोड़कर चोरी हो गई थी। बताया गया था नगदी सहित जेवरात चोरी हुए हैं। उनके अनुमान की कीमत 60,0000 रुपए थी। एसओजी और सर्विलांस टीम के सहयोग से पुलिस ने आरोपियों को पकड़ा। सोमवार को फतेहगढ़ के पुलिस लाइन सभागार में एसपी ने घटना का खुलासा किया। पुलिस लाइन में प्रेस वार्ता के दौरान एसपी विकास कुमार ने बताया लिपिक के घर हुई चोरी के खुलासे को लेकर टीम लगी हुई थी। पुलिस ने कादरी गेट थाना क्षेत्र के अंतर्गत मसेनी निवासी रवि उर्फ रॉकी उर्फ रामू को माल सहित गिरफ्तार किया। पूछताछ के दौरान आरोपी ने बताया कि बंद पड़े मकान के ताले तोड़कर नकब लगाकर चोरी करता है। पहले भी कई चोरी और नकब की घटनाओं में जेल जा चुका है। बताया कि साल 2017 में आरोपी लूट के मामले में जेल गया था। उसने ही सेंट्रल जेल के लिपिक के मकान का सरिया से ताला तोड़कर चोरी की थी। एसपी ने बताया आरोपी के पास से सरिया, एक जोड़ी झुमकी, एक जोड़ी छोटा टॉप्स, एक जोड़ी टॉप्स, 5 जोड़ी पायल, दो अंगूठी पुरुष एक अंगूठी महिला, दो कटोरा कटे हुए, पांच सुपारी एक मोबाइल लावा एक लैपटॉप 50000 नगद शिवम कुमार का आधार कार्ड नीरज अग्निहोत्री का पैन कार्ड नीरज अग्निहोत्री का आधार कार्ड बरामद हुआ है। एसपी ने बताया आरोपी पर 12 मामले दर्ज हैं।

कुख्यात चोर गिरफ्तार, लाखों के सोने चांदी के जेवरात एवं 50 हजार नकदी बरामद

फर्रुखाबाद । उत्तर प्रदेश में फर्रुखाबाद जिले की पुलिस ने एक कुख्यात चोर से लाखों रुपए के सोने चांदी के कीमती चोरी किए गए आभूषणों एवं 50,000 की नकदी बरामद की और गिरफ्तार कर सोमवार को जेल भेजने की कार्रवाई की। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने सोमवार को बताया कि कादरी गेट थाना क्षेत्र के मोहल्ला धर्मनगरिया निवासी शिवम अग्नि होत्री का मकान बंद था। इसी दौरान 21/22 मई 2024 की मध्य रात्रि करीब एक बजे चोरों ने नकाब लगाकर ,ताला तोड़कर लाखों रुपए की कीमत सोने चांदी के जेवरात और नकदी चोर चुरा ले गए थे। गृह स्वामी ने चोरी की घटना का मुकदमा थाने में दर्ज कराया था, जिसकी जांच करवाई शुरू की। इधर मुखबिर की सूचना पर पुलिस उपनिरीक्षक अमित कुमार शर्मा एवं एस ओ जी प्रभारी उप निरीक्षक जितेंद्र पटेल तथा सर्विलास उप निरीक्षक विशेष कुमार ने रविवार देर रात कादरी गेट थाना क्षेत्र मसैनी चौराहे के समीप से नाकेबंदी करके, कुख्यात चोर रवि उर्फ राकी उर्फ रामू उम्र करीब 35 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इस कुख्यात गिरफ्तार चोर के कब्जे से लाखों रुपए के कीमती सोने चांदी के जेवरात में अंगूठियां,कानों के टॉप्स, पायलें, मोबाइल, पैन कार्ड, आधार कार्ड तथा 50000 की नकदी आदि बरामद कर आज सोमवार को जेल भेजने कार्रवाई की गई। इस कुख्यात गिरफ्तार चोर के ऊपर एक दर्जन मुकदमे चल रहे हैं। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने,अच्छा कार्य करने वाली पुलिस टीम को 25000 का पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की।

गुना में पुलिया से नीचे गिरा ट्रक, 4 की मौत

4 की हालत गंभीर; कानपुर से कर्नाटक जा रहे थे

गुना। गुना में मिनी ट्रक पलटने से 4 लोगों की मौत हो गई। 4 लोग गंभीर घायल हैं। हादसा सोमवार तड़के 3.30 बजे एबी रोड पर म्याना से आधा किलोमीटर दूर हुआ।

म्याना थाना प्रभारी संजीत माबई ने बताया कि मिनी ट्रक में 6 मजदूर, ड्राइवर और क्लीनर थे। शुरुआती तौर पर यह समझ आ रहा है कि शायद ड्राइवर को झपकी आने के कारण हादसा हुआ है। ट्रक डिवाइडर को तोड़ते हुए पुलिया से नीचे गिरा। 3 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई, एक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

हादसे में विष्णु (32) पुत्र रामपाल, मीर (30) पुत्र चोखेलाल, विकास (35) और रंजीत (25) पुत्र नत्थू सिंह की मौत हो गई। क्लीनर शाहरुख, ड्राइवर अशोक, नवाब समेत चार गंभीर घायल हैं। इन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। मजदूर उत्तर प्रदेश में कानपुर के बताए जा रहे हैं। ड्राइवर अशोक रायबरेली का रहने वाला है। उसे ग्वालियर रेफर किया गया है।

कालपी से ट्रक में बैठे थे मजदूर, परिवार वाले गुना के लिए रवाना

घायल और मृतक मजदूर कानपुर के रहने वाले हैं। उन्हें कर्नाटक जाना था। ट्रक में उनकी बाइक, खाना बनाने का सामान, कपड़े और दूसरा जरूरी सामान था। हादसे के बाद सारा सामान बिखर गया। मृतकों और घायलों के परिवार वालों को सूचना दे दी गई है। वे लोग गुना के लिए रवाना हो गए हैं।

ट्रक ड्राइवर क्लीनर शाहरुख ने बताया, रायबरेली की गाड़ी है। हम फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) से शुजालपुर (शाजापुर, मध्यप्रदेश) जा रहे थे। मजदूर कालपी (जालौन, यूपी) से बैठे थे। सो रहे थे, तभी गाड़ी डिवाइडर से भिड़ गई।

हाथरस में प्रशासन ने चलाया अतिक्रमण हटाओ अभियान

हाथरस। हाथरस में आज पुलिस और नगर पालिका की टीम ने संयुक्त रूप से शहर में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस अभियान से अतिक्रमणकारियों में खलबली मची रही। कुछ अतिक्रमण पुलिस ने हटवा दिए तो कुछ अतिक्रमण अतिक्रमणकारियों ने खुद ही हटा लिए। वहां पर काफी वाहनों में सवारियां भी बैठाई जा रही थी। इन वाहन चालकों को भी पुलिस ने सख्त चेतावनी दी। हाथरस में अतिक्रमण एक बड़ी समस्या है और इसकी वजह से शहर में अक्सर जाम लग जाता है। रास्ते भी इसकी वजह से संकुचित हो रहे हैं। आज क्षेत्राधिकारी यातायात हिमांशु माथुर के नेतृत्व में नगर पालिका टीम और यातायात पुलिस की टीम ने तालाब चौराहा, मधुगढ़ी, बांस मंडी आदि मुख्य स्थानों पर सुगम यातायात व्यवस्था हेतु अवैध अतिक्रमण हटवाए। पुलिस प्रशासन कि इस कार्रवाई से वहां अतिक्रमणकारियों में खलबली मच गई। कुछ नहीं अपने तिरपाल, तख्त आदि खुद ही हटा लिए।

मेरठ के सपा विधायक रफीक अंसारी गिरफ्तार

लखनऊ से लौटते वक्त पुलिस ने बाराबंकी में पकड़ा, 7 दिन से अंडरग्राउंड थे

एजेंसी

मेरठ। मेरठ शहर के सपा विधायक रफीक अंसारी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। लखनऊ से मेरठ लौटते वक्त बाराबंकी में उनकी गिरफ्तारी हुई।

रफीक 7 दिन से अंडरग्राउंड थे। पुलिस की 3 टीमें उनकी तलाश में छापेमारी कर रही थीं।

अंसारी के खिलाफ कोर्ट से 100 NBW (गैर जमानती वारंट) जारी हुए, फिर भी वह कोर्ट में पेश नहीं हुए।

हाईकोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिए थे। एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह ने बताया, शाम तक पुलिस रफीक को लेकर मेरठ पहुंचेगी।

29 साल पुराने केस में कोर्ट में नहीं पेश हुए

1995 में मेरठ में जाम लगाने और तोड़फोड़ करने के मामले में रफीक समेत 40 लोगों पर केस दर्ज हुआ था। इसमें रफीक समेत 22 आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल हुई थी। 1997 में कोर्ट ने इस मामले में रफीक के अलावा सभी को बरी कर दिया था।

बरी नहीं होने के खिलाफ रफीक इलाहाबाद हाईकोर्ट चले गए। कोर्ट में कहा- जिस मामले में सभी बरी हो चुके हैं, उसमें मुझे भी बरी किया जाए। लेकिन, कोर्ट ने उन्हें बरी नहीं किया। कोर्ट ने उन्हें कई बार नोटिस भेजा। लेकिन अंसारी कोर्ट में पेश नहीं हुए। इस पर गैर जमानती वारंट जारी किए गए।

इसके बाद अंसारी ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर गैर जमानती वारंट को चुनौती दी, लेकिन कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी। साथ ही डीजीपी को सपा विधायक को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करने के आदेश दिए।

वकील बोले- हमें कभी कोर्ट से सूचना नहीं मिली

विधायक के कोर्ट में पेश न होने पर रफीक अंसारी के वकील अमित दीक्षित का कहना है- कभी रफीक अंसारी को कोर्ट की ओर से कोई इन्फॉर्मेशन नहीं दी गई। न तो चार्जशीट में नाम शामिल होने पर कोई जानकारी मिली। न ही उसके बाद कोर्ट से पेशी को लेकर कोई सूचना मिली। वारंट तामील कराने की ड्यूटी यूपी पुलिस की थी, लेकिन कभी कोई जानकारी हमारे पास नहीं आई। पिछले दिनों हमें मामले की जानकारी मिली तब हमने बेल के लिए अप्लाई किया, लेकिन उसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। हम दोबारा बेल मूव करेंगे।

यूपी में आगरा सबसे गर्म, पारा 47 डिग्री पहुंचा

कूलर से ठंडे किए जा रहे ट्रांसफॉर्मर; पुलिस वाले ने बचाई बेहोश बंदर की जान

कानपुर। नौतपा के तीसरे दिन उत्तर प्रदेश में आगरा सबसे गर्म रहा। सोमवार दोपहर 1.45 बजे पारा 47 डिग्री पहुंच गया। मुरादाबाद में इस कदर गर्मी पड़ रही है कि पानी डालकर ट्रांसफॉर्मर को ठंडा करना पड़ रहा। भीषण गर्मी के कारण ट्रेनों के एसी लगातार फेल हो रहे हैं।

बुलंदशहर में भीषण गर्मी के चलते थाने के अंदर ही एक बंदर बेहोश हो गया। पुलिस वाले ने तुरंत समझदारी दिखाते हुए उसे पानी पिलाया। फिर पंपिग कर उसकी जान बचा ली। मौसम विभाग ने आज 29 शहरों के

लिए हीटवेट का अलर्ट जारी किया है। 16 जिलों में वार्म नाइट की चेतावनी भी है। मौसम विभाग ने कहा- सुबह 11 से दोपहर 3 बजे तक जरूरत न हो तो घर से बाहर न निकलें।

बाहर निकलना भी है, तो पानी पीकर ही निकलें। खाली पेट न रहें। सिर को सफेद कपड़े से ढक कर ही निकलें और हल्के कपड़े पहनें। बच्चे और बुजुर्ग बाहर जाने से बचें।

48 डिग्री तक जाएगा कई शहरों का तापमान

सीएसए यूनिवर्सिटी के मौसम विज्ञानी डॉ. स्ह सुनील पांडेय ने बताया- नौतपा में अभी कई शहरों में पारा 48 डिग्री तक जा सकता है। तापमान में बढ़ोतरी लगातार जारी रहेगी। दिन के मुकाबले अब रातें भी गर्म होंगी।

अमेठी में खाना बनाते समय गैस सिलेंडर में विस्फोट

अमेठी जिला। अमेठी के पीपरपुर थाना क्षेत्र के मल्लेपुर मजरे भोजपुर गांव में खाना बनाते समय सिलेंडर में हुए विस्फोट से आग लगने से ग्रामीण का छप्पर के अंदर रखा एक लाख रुपए नगद और लाखों के जेवरात सहित गृहस्थी का सारा सामान जलकर खाक हो गया। वहीं मौके पर छप्पर के अंदर परिवार के कोई भी सदस्य मौजूद न होने से परिजन बाल-बाल बच गए हैं। सोमवार को हल्का लेखपाल ने मौके पर पहुंच कर नुकसान का जायजा लिया है। दरअसल ये पूरा मामला भादर पीपरपुर थाना क्षेत्र के मल्लेपुर मजरे भोजपुर का है। जहां ग्रामीण मक्खन यादव के छप्पर के आशियाने में खाना बनते समय गैस सिलेंडर में आग लगने से विस्फोट हो गया। देखते ही देखते चंद मिनटों में छप्पर के अंदर रखा सारा सामान जलकर खाक हो गया।

गैस सिलेंडर में आग लगने और विस्फोट के समय छप्पर के अन्दर परिवार का कोई भी सदस्य मौजूद नहीं थी। इसलिए परिवार के सभी सदस्य तो बाल-बाल बच गए लेकिन छप्पर के अंदर रखा एक लाख रुपये नगद, सोने-चांदी के जेवरात सहित कपड़े व राशन के साथ गृहस्थी का सारा सामान जलकर खाक हो गया।

प्रसव के बाद तबीयत बिगड़ने से महिला की मौत

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद जिले के शिकोहाबाद में सोमवार को प्रसव के बाद प्रसूता की हालत अचानक बिगड़ गई, जिसके बाद अस्पताल के स्टाफ ने महिला को आगरा के लिए रेफर कर दिया। रास्ते में महिला की मृत्यु हो गई। परिजन शव को लेकर अस्पताल आए और अस्पताल में शव रख कर जमकर हंगामा किया। सूचना पर थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने परिजनों को समझा कर शव पोस्टमार्टम के लिए फिरोजाबाद जिला अस्पताल भेज दिया। थाना मटसेना क्षेत्र के गांव लेखराजपुर निवासी सुनीती (23) पत्नी सतेंद्र को रविवार शाम को प्रसव पीड़ा हुई। परिजन उसको लेकर हाईवे किनारे स्थित लाइफ केयर अस्पताल आए। यहां पर महिला ने देर रात सामान्य प्रसव से बेटे को जन्म दिया। दोनों जच्चा और बच्चा स्वस्थ थे। परिजनों का आरोप है कि डॉक्टर ने ब्लड मंगा कर चढ़ा दिया इसी दौरान महिला की हालत बिगड़ने लगी। जैसे पूरी बोतल ब्लड की चढ़ी महिला की हालत खराब होती चली गई। इस पर अस्पताल स्टाफ ने महिला को आगरा के लिए रेफर कर दिया। परिजनों का आरोप है कि रास्ते में महिला की मृत्यु हो गई। परिजन महिला को लेकर आगरा प्राइवेट अस्पताल पहुंच गये। डॉक्टर ने चेक करके उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद परिजन शव को एंबुलेंस में लेकर अस्पताल आए और अस्पताल के अंदर रख कर हंगामा करने लगे।

अग्नि सुरक्षा के उपायों के सम्बन्ध में विशेष प्रचार-प्रसार किया जाये : डीआईजी

अग्नि से सुरक्षा हेतु डीआईजी ने दिए सख्त निर्देश

ललितपुर। झांसी, अग्निशमन विभाग को 24 घंटे सतर्क रहने के आदेश। किसी भी स्थिति में ना हो लापरवाही, लोगों को करें जागरूक अग्नि सुरक्षा व्यवस्था एवं बचाव के सम्बन्ध में पुलिस उपमहानिरीक्षक, झांसी परिक्षेत्र, झांसी कलानिधि नैथानी द्वारा रेंज के जनपद झांसी, जालौन एवं ललितपुर के जनपद प्रभारियों, अग्निशमन अधिकारियों को अग्नि सुरक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश निर्गत किये गये है। प्रदेश भर में वर्तमान में बढ़ते तापमान के कारण सम्भावित अग्नि दुर्घटनाओं के दृष्टिगत झांसी रेंज के जनपद झांसी, जालौन एवं ललितपुर

के रेस्टोरेन्टों, अस्पताल, नर्सिंग होम्स (विशेषकर बच्चों के अस्पताल), माल्स, बैन्क्वेट हाल व भीड़-भाड़ वाले स्थान, सघन बाजारों, तथा हाई राइज बिल्डिंग एण्ड अपार्टमेन्टस आदि में फायर ऑडिट, इवैक्युएशन ड्रिल व अग्नि सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने हेतु दिनांक 26.05.2024 से 06.06.2024 तक विशेष चेकिंग अभियान चलाकर अग्नि सुरक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दुओं पर कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये गये है। फायर रिस्क के अनुसार अग्नि सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाय। सुरक्षित पलायन मार्ग (प्रवेश/निकास मार्ग) सुनिश्चित किया जाये स्थल की क्षमता से अधिक व्यक्तियों का प्रवेश प्रतिबन्धित किया जाय। अग्नि सुरक्षा के उपायों के सम्बन्ध में विशेष प्रचार-प्रसार किया जाये तथा रेजिडेन्ट वेलफेयर एसोसियेशन्स को विशेष रूप से सतर्क व जागरूक किया जाय। इलेक्ट्रिकल सेफ्टी के दृष्टिगत विद्युत उपकरणों/तारों का इलेक्ट्रिकल ऑडिट कराकर विद्युत लोड के अनुसार उपकरणों/तारों को अधिष्ठापित कराये जाने हेतु निर्देशित किया जाय। फायर रिस्क के दृष्टिगत निरीक्षण के दौरान मानक में पाई गयी कमियों के सम्बन्ध में संचालकों को निर्देशित किया जाय। डीआईजी झांसी द्वारा अग्नि सुरक्षा व्यवस्था के विशेष अभियान को अधिक से अधिक सफल बनाये जाने तथा अग्निकाण्ड की सम्भावित दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु झांसी रेंज के जनपद प्रभारियों व अग्निशमन अधिकारियों को उपरोक्त बिन्दुओं का अक्षरश। अनुपालन किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है।

महिला की हत्या के मामले में पुलिस ने पति व बहनोई को किया गिरफ्तार

ललितपुर। कोतवाली पुलिस व एसओजी/सर्विलास ललितपुर की संयुक्त टीम द्वारा पत्नी की हत्या करने वाले वांछित अभियुक्तों पति व बहनोई को किया गया गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से हत्या में प्रयुक्त चैकदार तौलिया को किया गया बरामद। अपर पुलिस महानिदेशक कानपुर जोन कानपुर एवं पुलिस उप महानिरीक्षक झांसी, परिक्षेत्र झांसी के निर्देश के क्रम में पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार एवं क्षेत्राधिकारी सदर अभय नारायण राय के निकट पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध

चलाये जा रहे अभियान के क्रम में घटना के सफल अनावरण हेतु थाना कोतवाली व एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त टीम द्वारा थाना कोतवाली पर पंजीकृत मु0अ0सं0 412/2024 धारा 302/34 आईपीसी में वांछित अभियुक्तगण 1- पुष्पेन्द्र राजा पुत्र वीर सिह बुन्देला उम्र करीब 40 वर्ष निवासी ग्राम भैरा थाना महरौनी जपनद ललितपुर,2.टिन्कूराजा उर्फ अमरेन्द्र सिहं पुत्र रामपाल सिंह उम्र करीब 35 वर्ष निवासी खोखरा थाना कोतवाली जनपद ललितपुर को मुखबिर की सूचना पर देवगढ रोडफ्लाई ओवर की तरफ से दिनांक 26.05.2024 को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है ।

वादी ने थाना कोतवाली में प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि अभियुक्तगण 1- (पति) पुष्पेन्द्र सिंह पुत्र वीर सिह उम्र करीब 40 वर्ष निवासी ग्राम भैरा थाना महरौनी जपनद ललितपुर,2-(बहनोई) टिन्कूराजा उर्फ अमरेन्द्र सिहं पुत्र रामपाल सिंह उम्र करीब 35 वर्ष निवासी खोखरा थाना कोतवाली जनपद ललितपुर द्वारा जमीन के विवाद को लेकर पुत्री की हत्या कर देने के सम्बन्ध में सूचना दी गयी।

बांदा में महिला के साथ गैंगरेप

बांदा। बांदा में बच्चों का इलाज कराकर अपने घर वापस जा रही महिला को रास्ते में पति का दोस्त मिल गया। जिसके बाद उसने बाइक से घर छोड़ने के बहाने दुकान में ले जाकर कोल्ड ड्रिंक के साथ नशीला पदार्थ पीला दिया। उसके बाद मेडिकल कॉलेज के पीछे ले जाकर दोस्त ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर महिला के साथ दुष्कर्म जैसी घटना को अंजाम दिया। विरोध करने पर प्राइवेट पार्ट पर पैरों से प्रहार कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और मेडिकल कराया गया है। आपको बता दें की पूरा मामला शहर कोतवाली क्षेत्र के एक गांव से सामने आया है। जहां की रहने वाली महिला ने तहरीर देते हुए बताया की 21 मई को अपने बेटे का इलाज कराने के लिए शहर के अतर्रा चुंगी चौकी के पास स्थित एक क्लीनिक में आई थी। बच्चे को दिखाने के बाद शाम को वह अपने घर वापस जा रही थी। तभी रास्ते में उसके पति का दोस्त मिल गया। जिसने कहा कि वह गांव की तरफ जा रहा है। तुम्हें भी बाइक से छोड़ दूंगा। वह उसकी बातों में आ गई। तभी उसने महिला और उसके बेटे को कोल्ड ड्रिंक पिलाई। जिसमें नशीला पदार्थ मिला दिया था। कोल्ड ड्रिंक पीते ही दोनों अर्ध चेतना अवस्था में आ गए। तभी आरोपी उन्हें रानी दुर्गावती मेडिकल कॉलेज के पीछे अपनी बाइक से ले गया।

2,000 से अधिक लोग जिंदा दफन... भूस्खलन के कारण

मेलबर्न। पापुआ न्यू गिनी सरकार ने कहा है कि भूस्खलन के कारण ''2,000 से अधिक लोग जिंदा दफन'' हो गए है। सरकार ने राहत कार्यों के लिए औपचारिक रूप से अंतरराष्ट्रीय मदद मांगी है। इससे पहले अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) ने पापुआ न्यू गिनी में बड़े पैमाने पर हुए भूस्खलन से 670 लोगों की मौत होने की आशंका जाहिर थी। सरकार का आंकड़ा संयुक्त राष्ट्र की इस एजेंसी के आंकड़ों से करीब तिगुना है। द्वीप राष्ट्र के राष्ट्रीय आपदा केंद्र के कार्यवाहक निदेशक ने कहा कि भूस्खलन में ''2000 से अधिक लोग जिंदा दफन हो गए'' और ''बड़ा विनाश'' हुआ। भूस्खलन के बाद से हताहत हुए लोगों की संख्या का अनुमान व्यापक रूप से अलग-अलग है और अभी यह स्पष्ट नहीं है कि अधिकारियों ने पीड़ितों की संख्या कैसे गिनी। ऑस्ट्रेलिया ने पापुआ न्यू गिनी में भूस्खलन स्थल पर मदद के लिए विमान और अन्य उपकरण भेजने की तैयारी की। पापुआ न्यू गिनी के पहाड़ी इलाकों में रात भर हुई बारिश के बाद यह आशंका पैदा हो गई है कि जिस कई टन मलबे में सैकड़ों ग्रामीण दबे हैं, वह खतरनाक रूप से अस्थिर हो सकता है। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने कहा कि उनके अधिकारी पापुआ न्यू गिनी के अपने समकक्षों के साथ बात कर रहे हैं। देश की राजधानी पोर्ट मोरेस्बी से लगभग 600 किलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में एंगा प्रांत में शुक्रवार को भूस्खलन हुआ था। इस भूस्खलन में मारे गए छह लोगों के शव बरामद हुए हैं।

यूरोपीय बैंक रूस से निकल जाएं या फिर प्रतिबंधों के लिए तैयार रहें

-अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी जेनेट येलेन ने यूरोपीय बैंकों को दी चेतावनी

वॉशिंगटन। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी जेनेट येलेन ने रूस में काम कर रहे यूरोपीय बैंकों चेतावनी दी वे रूस से फौरन निकल जाएं। इटली में जी7 वित्त नेताओं के साथ एक बैठक में येलेन ने जोर देकर कहा कि अमेरिका उन बैंकों पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहा है जो रूस के युद्ध प्रयासों का समर्थन करने वाले लेनदेन को आसान बनाते हैं। येलेन ने रूसी परिचालनों में शामिल जोखिमों को स्वीकार करते हुए कहा कि यदि जरूरी हुआ तो अमेरिका इन बैंकों पर प्रतिबंध लगा सकता है। उन्होंने ऑस्ट्रिया के रायफ़ेसेन बैंक इंटरनेशनल और इतालवी बैंक यूनी क्रेडिट को उनके पर्यवेक्षकों द्वारा दी गई सलाह का भी उल्लेख किया, जिसमें रूस में उनकी गतिविधियों के साथ अत्यधिक सावधानी बरतने का आग्रह किया था। येलेन की बातों को ध्यान में रखते हुए यूरोपीय सेंट्रल बैंक के नीति निर्माता फैबियो पैनेटा ने इतालवी बैंकों को रूसी लेनदेन से बाहर निकलने की सलाह दी। रूस में सबसे बड़ा यूरोपीय ऋणदाता रायफ़ेसेन, जिसके बाद यूनिकैडिट है का उल्लेख इस संदर्भ में किया गया है। बता दें अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन ने ट्रेजरी को यूक्रेन में संघर्ष के जवाब में रूस और अन्य संस्थाओं के खिलाफ प्रतिबंधों की चोरी में मदद करने पर बैंकों को अमेरिकी वित्तीय प्रणाली से अलग करने की शक्तियां प्रदान की हैं। इसके बाद ही येलेन ने रूस में यूरोपीय बैंकों से कहा कि वे रूस से निकल जाएं या फिर उन पर लगने वाले प्रतिबंधों के लिए तैयार रहें। येलेन ने इस बात पर भी जोर दिया कि रूस की अर्थव्यवस्था तेजी से युद्ध अर्थव्यवस्था बन रही है।

ब्राजील में बाढ़ से मरने वालों की संख्या 169 हुई

साओ पाउलो। दक्षिणी ब्राजील के रियो ग्रांडे डो सुल राज्य में 29 अप्रैल को आए तूफान के बाद से रिकॉर्ड बारिश और बाढ़ के कारण मरने वालों की संख्या 169 हो गई है। आपदा एजेंसी ने रिपोर्ट में कहा, पिछले 24 घंटों में तीन और शव बरामद किए गए, जबकि राज्य में अब तक देखी गई सबसे खराब प्राकृतिक आपदा के कारण 56 लोग लापता हैं। बाढ़ और उफनती नदियों के कारण 23 लाख से अधिक निवासी विस्थापित हुए हैं। गवर्नर एडुआर्डो लेइट ने कहा है कि राज्य की राजधानी पोर्टो एलेग्रे और अन्य 469 नगर पालिकाओं में क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण में कम से कम एक साल लगेगा। मौसम पूर्वानुमान में पोर्टो एलेग्रे और राज्य के अन्य प्रमुख शहरों में इस आगामी सप्ताह में अधिक बारिश की संभावना व्यक्त की गई है, जोखिम को कम करने के लिए स्कूल 48 घंटों के लिए बंद किया गया। रियो ग्रांडे डो सुल अर्जेंटीना और उरुग्वे की सीमा पर है और यह ब्राजील में एक महत्वपूर्ण कृषि केंद्र और लैटिन अमेरिका में चावल का शीर्ष उत्पादक क्षेत्र है।

टोंगा में शक्तिशाली भूकंप, सुनामी आने का खतरा नहीं

नुकुआलोफा। द्वीप राष्ट्र टोंगा में सोमवार को भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए, लेकिन भूकंप के कारण सुनामी आने का खतरा नहीं है और न ही लोगों के हताहत होने की कोई सूचना मिली है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने बताया कि भूकंप सुबह नौ बजकर 47 मिनट पर आया और इसकी प्रारंभिक तीव्रता 6.6 थी। भूकंप का केंद्र राजधानी नुकु'आलोफा से 198 किलोमीटर उत्तर में 112 किलोमीटर की गहराई पर था।

लाओस में फंसे 13 भारतीय को बचाया

लाओस। अवैध रूप से काम के लिए बहला फुसलाकर लाओस ले जाए गए 13 भारतीय को बचाकर उन्हें घर वापस भेजा जा रहा है। लाओस में भारतीय दूतावास ने इसकी जानकारी दी। पिछले महीने लाओस में 17 भारतीय कामगारों को बचाकर उन्हें भारत वापस लाया गया था। लाओस में भारतीय दूतावास ने कहा सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में भारतीयों की सुरक्षा और हित सुनिश्चित करने के लिए दूतावास ने 13 भारतीयों को बचाया और वापस लाया गया। इनमें अटापेउ प्रांत में एक लकड़ी के कारखाने में काम करने वाले ओडिशा के सात कामगार और बोकेओ प्रांत में स्थित गोल्डन ट्रायंगल एसईजेड में काम करने वाले छह भारतीय युवा शामिल हैं।

मेक्सिको में चुनाव के पहले 36 मौतें

मेक्सिको। मेक्सिको में अगले महीने आम चुनाव होने जा रहे हैं। चुनाव के पहले ही उम्मीदवारों की हत्या की जा रही है। जिसके कारण मेक्सिको में लोकतंत्र खतरे में पड़ गया है। जगह-जगह गोलीबारी हो रही है। सेंट्रल मेक्सिको की गिसेला गायटन मेयर पद के लिए एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पहुंची। उसी समय गोलीबारी शुरू हो गई। थोड़ी देर बाद उनका मृत शरीर सड़क पर पड़ा हुआ मिला। पिछले 1 साल के अंदर चुनाव को लेकर जो संभावित उम्मीदवार थे। उनकी खुलेआम हत्या की जा रही है। अभी तक 36 उम्मीदवारों की मौत मेक्सिको में हो चुकी है। कई हथियारबंद गिरोह खुले आम चुनाव को लेकर भय फैला रहे हैं। उम्मीदवार और उनके रिश्तेदारों की हत्या कर रहे हैं। जबरिया वसूली का रैकेट भी चलाया जा रहा है। कट्टरपंथी अपराधिक हथियारबंद समूह खुलेआम वारदात कर रहे हैं। मेक्सिको ओर आसपास के शहरों में खुलेआम खून खराबा जारी है। जिसके कारण चुनाव के पहले ही लोगों में भय फैल गया है। आतंकवादी संगठन चुनाव में उन उम्मीदवारों को खड़ा करना और जिताना चाहते हैं। जिन्हें वह पसंद करते हैं। जो उम्मीदवार उनके विरोध में हैं, उनकी हत्या करने का अभियान चला रहे हैं।

शरणार्थी शिविरों पर इजरायल की एयर स्ट्राइक, 40 से ज्यादा लोगों की मौत

गाजा। रविवार को इजरायली बलों ने राफा में शरणार्थी शिविरों पर हवाई हमले किए। इसमें कम से कम 40 से ज्यादा लोग मारे गए हैं और बड़ी संख्या में लोग गंभीर रुप से घायल हैं। मौत का आंकड़ा अभी और बढ़ सकता है। आईडीएफ ने ऑपरेशन के बारे में बताया कि खुफिया सूचना के आधार पर हमारी टीम ने हमास के शिविरों पर हमला किया, जिसमें वेस्ट बैंक का हमास कमांडर समेत कई आतंकी मारे गए हैं। उधर, हमास ने दावा किया है कि इजरायली सेना ने उन स्थानों को निशाना बनाया जहां 15 दिन पहले आम लोगों ने हमलों से बचने के लिए शरण ली थी। दक्षिण गाजा के स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि गाजा पट्टी से अपनी जान बचाकर राफा भागे विस्थापितों पर इजरायली बलों ने हवाई हमले किए। इस हमले में कम से कम 35 लोग मारे गए हैं। हमास ने इजरायली हमले को नरसंहार करार दिया है। हमास ने हमले के बाद एक बयान में कहा कि इजरायली बलों का हमला इतना क्रूर था कि उन्होंने विस्थापितों के लिए बनाए गए टैंट और राहत शिविरों पर बम बरसाए। नजारा बेहद भयावह था- टैंट और उसके अंदर मृत पड़े शव आग की बरसात में गल और जल रहे थे। हमास ने इजरायल पर निर्दोषों की हत्या का इल्जाम लगाया है।

सियोल में जापान के प्रधानमंत्री फिमियो किशीडा ट्राइलेटल सम्मेलन के लिए अपने समकक्ष के साथ दक्षिण कोरिया पहुंचे।

अमेरिका में बवंडर का कहर : हवा में उड़ते दिखे कई घर,कारों के परखच्चे उड़े

टेक्सास। अमेरिका में आए एक बवंडर ने देखते ही देखते बहुत कुछ तहस नहस कर दिया है। कई घर हवा में उड़ते दिखाई दिए तो तमाम कारें हवा की चपेट में आई और काफी ऊपर तक उड़ गईं। जब नीचे गिरीं तो उनके परखच्चे उड़ गए। बंबर इतना तेज था कि टेक्सास, ओक्लाहोमा और अर्कांसस राज्यों में बवंडर के कहर से कम से कम 18 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। कई इमारतें, बिजली और गैस लाइनें और एक ईंधन स्टेशन नष्ट हो गया, जहां कई लोग शरण लिए हुए थे। खबरों में रविवार को यह जानकारी दी गई। कुक काउंटी के शेरिफ रे सैपिंगटन ने स्थानीय मीडिया को बताया कि अधिकारियों को मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। उन्होंने कहा कि इस बीच खोज एवं बचाव अभियान जारी है और उन्हें जीवित बचे लोगों के मिलने की उम्मीद है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक शनिवार रात (स्थानीय समय) उन राज्यों में भयंकर तूफान आया, जहां तापमान बहुत अधिक चल रहा है। टेक्सास का कुक काउंटी, डलास के उत्तर में और डेंटन काउंटी सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से हैं, जहां सात लोगों की मौत हो गई। कुक काउंटी के शेरिफ रे सैपिंगटन ने स्थानीय मीडिया को बताया कि अधिकारियों को मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। उन्होंने कहा कि इस बीच खोज एवं बचाव अभियान जारी है और उन्हें जीवित बचे लोगों के मिलने की उम्मीद है। बवंडर ने पूरे टेक्सास में सतही यातायात को भी प्रभावित किया, जिससे लॉरियां पलट गईं और प्रमुख राजमार्ग बंद हो गए, जबकि कई खंभे उखड़ गए, जिससे बिजली आपूर्ति बंद हो गई।

अंतरिक्ष से अमेरिका पर पैनी नजर रखेगा नार्थ कोरिया का तानाशाह

टोक्यो (एजेंसी)। लंबे समय से नार्थ कोरिया और अमेरिका के बीच टसन चली आ रही है। दोनों ही देश एक दूसरे पर पैनी नजर रखते हैं। उनकी गतिविधियों के अनुसार अपनी तैयारी करते हैं। इसी बीच खबर आ रही है कि अब नार्थ कोरिया के तानाशाह ने अपनी नई योजना के तहत अमेरिका पर पैनी नजर रखने की बड़ी योजना बना रखी है। किम जोंग उन ने एक बार फिर से अमेरिका के दिल की धड़कनें बढ़ा दी हैं। कोरिया फिर अपना स्पाई सैटेलाइट यानी जासूसी सैटेलाइट भेजने वाला है। उसने जापान को इसकी सूचना दे दी है। नॉर्थ कोरिया ने जापान से कहा है कि वह अगले सप्ताह की शुरुआत में सैटेलाइट लॉन्च करने की योजना बना रहा है। यह नॉर्थ कोरिया का दूसरा स्पाई सैटेलाइट होगा। इसे 3 जून तक अंतरिक्ष की कक्षा में भेजा जाएगा। साउथ कोरिया, जापान और चीन के नेता सोमवार को अपनी पहली त्रिपक्षीय बैठक के लिए सियोल में एकत्र थे, तभी तानाशाह के इस कदम के बारे में यह जानकारी सामने आई। जापान के कोस्ट गार्ड ने कहा, 'उसे नॉर्थ कोरिया ने सैटेलाइट रॉकेट को लॉन्च करने की सूचना दी है। उसने सैटेलाइट लॉन्च को लेकर एक सुरक्षा चेतावनी दी है।

सैटेलाइट लॉन्च की प्रक्रिया कोरियाई प्रायद्वीप और चीन के बीच और फिलीपीन द्वीप लुजोन के पूर्व जलक्षेत्र में सोमवार से शुरू होकर 3 जून की आधी रात तक चलेगी। अब सवाल उठता है कि आखिर नॉर्थ कोरिया ने अपने सैटेलाइट लॉन्च की सूचना जापान को क्यों दी है? दरअसल, नॉर्थ कोरिया ने जापान को लॉन्च की जानकारी इसलिए दी है, क्योंकि जापान का ही कोस्ट गार्ड पूर्वी एशिया में समुद्री सुरक्षा जानकारी को कॉर्डिनेट और डिस्ट्रीब्यूट करता है। नॉर्थ कोरिया अपना दूसरा स्पाई सैटेलाइट लॉन्च करने वाला है। इससे पहले पिछले साल नवंबर 2023 में नॉर्थ कोरिया ने अंतरिक्ष में अपना पहला जासूसी सैटेलाइट तैनात किया था. इससे पहले उसे दो बार असफलता हाथ लगी थी। मगर तीसरी बार में उसने अंतरिक्ष में फतह हासिल कर ली। अंतरिक्ष से अपने दुश्मनों पर नजर रखने के लिए नॉर्थ कोरिया लगातार जासूसी सैटेलाइट तैनात कर रहा है।

हालांकि, जापान चाह रहा है कि नॉर्थ कोरिया यह लॉन्चिंग न करे। जापानी कोस्ट गार्ड ने आगे कहा, 'जापानी प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा ने अधिकारियों को अमेरिका, दक्षिण कोरिया और अन्य देशों के साथ सहयोग के साथ नॉर्थ कोरिया से सैटेलाइट लॉन्च न करने का दृढ़ता से अनुरोध करने को कहा है। इतना ही नहीं, किसी भी इमरजेंसी के हालातों के लिए उपाय करने और तैयार रहने का निर्देश दिया। वहीं, साउथ कोकरिया की सेना ने शुक्रवार को कहा कि उसे संकेत मिले हैं कि उत्तर कोरिया ऐसी गतिविधियों में शामिल है, जिसके बारे में माना जा रहा है कि वह उत्तर-पश्चिम में अपनी मुख्य टोंगचांगरी लॉन्च फैसिलिटी से से एक जासूसी सैटेलाइट लॉन्च करने की तैयारी कर रहा है।नॉर्थ कोरिया ने अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य खतरों से निपटने के लिए और अंतरिक्ष-आधारित निगरानी नेटवर्क बनाने के अपने प्रयासों के तहत अपना पहला जासूसी सैटेलाइट अंतरिक्ष की कक्षा में भेजा था। नॉर्थ कोरिया स्पाई सैटेलाइट से अमेरिका और साउथ कोरिया की हर गतिविधि पर नजर रखना चाहता है। उसका कहना है कि अमेरिका और साउथ कोरिया की गतिविधियों पर बेहतर निगरानी रखने के लिए उसने यह कदम उठाया है। इतना ही नहीं, अपनी परमाणु-सक्षम मिसाइलों की सटीक-हमला क्षमता बढ़ाने के लिए जासूसी सैटेलाइट की जरूरत है।

सऊदी विदेश मंत्री फैसल ने इजरायल के इस रुख पर जाहिर की चिंता

ब्रसेल्स (एजेंसी)। सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने कहा है कि इजरायल और फिलिस्तीन विवाद का द्वि-राष्ट्र समाधान ही क्षेत्र में स्थायी शांति और सुरक्षा की नींव रखेगा। इसके साथ ही सऊदी अरब ने इजरायल के द्वि-राष्ट्र समाधान को स्वीकार नहीं करने पर चिंता जाहिर की। सऊदी विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान बिन अब्दुल्ला ने ये बातें कहीं। सऊदी विदेश मंत्री ने साफ किया कि फिलिस्तीनी राज्य के बिना इजरायल का अस्तित्व नहीं होगा। प्रिंस फैसल गाजा पट्टी में विकास को लेकर यूरोपीय देशों के विदेश मंत्रियों और प्रतिनिधियों के साथ मंत्रीस्तरीय समिति की बैठक में हिस्सा लेने बेल्जियम पहुंचे थे।

बैठक के बाद प्रिंस फैसल ने कहा, मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक विश्वसनीय फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना के साथ दो-राज्य समाधान फिलिस्तीनियों के हित में है और यह उनके आत्मनिर्णय के अधिकार को पूरा करता है। उन्होंने कहा, यह इजरायल के हित में भी है, जो इजरायल को सुरक्षा प्रदान करता है जिसका वह हकदार है।

सऊदी विदेश मंत्री ने कहा, तथ्य यह है कि इजरायल की वर्तमान सरकार को इस बात का अहसास नहीं है, निश्चित ही यह अत्यधिक चिंता का विषय है। यह बेहद जरूरी है कि इजरायल यह स्वीकार करे कि फिलिस्तीनी राज्य के बिना उसका अस्तित्व नहीं है। बैठक में हिस्सा लेने वाले प्रिंस फैसल ने कहा, इजरायल की स्थिति से अलग द्वि-राष्ट्र समाधान को फिर से जीवित करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि फिलिस्तीनियों को आत्मनिर्णय का अधिकार है या नहीं, यह इजरायल नहीं तय कर सकता है। उन्होंने गाजा में संघर्ष को समाप्त करने और द्वि-राष्ट्र समाधान को लागू करने की दिशा में आवश्यक कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सऊदी अरब ने रियाद और ब्रसेल्स बैठकों के दौरान दि-राष्ट्र समाधान को जीवित रखने पर ध्यान केंद्रित किया है।

पाकिस्तान में सेना के दखल को खत्म करने की कोशिश में जुटी शहबाज सरकार

इस्लामाबाद(एजेंसी)। अक्सर पाकिस्तान के बारे में कहा जाता है कि वहां सेना और सत्ता एक सिक्के के दो पहलू हैं। यही वजह है कि सेना में सत्ता और सत्ता में सेना की झलक दिख ही जाती है। हालांकि, अब शहबाज सरकार सेना और आईएसआई के दखल को रोकने की तैयारी में लग गई है। यहां के प्रधानमंत्री के राजनीतिक और सार्वजनिक मामलों के सलाहकार राणा सनाउल्ला ने एक तंत्र बनाने का आह्वान किया है ताकि संस्थान एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र में दखलंदाजी नहीं कर पाएं। दरअसल, उनका यह बयान न्यायाधीशों द्वारा पत्र लिखे जाने के बाद आया है, जिसमें न्यायिक कार्यों में खुफिया एजेंसियों द्वारा कथित हस्तक्षेप की बात कही गई थी। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) के न्यायाधीश न्यायमूर्ति मोहसिन अख्तर कियानी, न्यायमूर्ति तारिक महमूद जहांगीरी, न्यायमूर्ति बाबर सत्तार, न्यायमूर्ति सरदार इजाज इशाक खान, न्यायमूर्ति अरबाब मुहम्मद ताहिर और न्यायमूर्ति समन फफत इम्तियाज ने 26 मार्च को सर्वोच्च न्यायिक परिषद को पत्र भेजा था। जिसमें न्यायिक मामलों में खुफिया एजेंसियों के कथित हस्तक्षेप पर एक न्यायिक सम्मेलन बुलाने का आग्रह किया था। सनाउल्ला ने एक मीडिया चैनल के शो में कहा, न्यायाधीशों द्वारा एक पत्र लिखना एक तंत्र के विकास के लिए पर्याप्त है ताकि संस्थाएं एक-दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करें। रिपोर्ट के अनुसार, राणा ने यह टिप्पणी इस्लामाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के उस पत्र के संदर्भ में की जो मार्च में सामने आया था, जिसमें न्यायिक मामलों में खुफिया एजेंसियों के हस्तक्षेप का आरोप लगाया गया था।

पाकिस्तान को ठेंगा दिखाकर... तालिबान से दोस्ती बढ़ रहा चीन

पोर्ट मोरेस्बी (एजेंसी)। बीजिंग (ईएमएस)। अफगानिस्तान में साल 2021 में तालिबान के फिर से सत्ता में आने के बाद से चीन से उनके रिश्ते बेहतर हो रहे हैं। चीन ने बीते साल झाओ जिंग को अफगानिस्तान में अपना राजदूत नियुक्त किया था। ऐसा करने वाला चीन पहला देश था। इस पर तालिबान की ओर से खुशी जाहिर की गई थी। चीन के फैसले को क्षेत्र में अपना प्रभाव मजबूत करने के प्लान के तौर पर देखा गया था। अफगानिस्तान उस क्षेत्र के केंद्र में है, जहां चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड परियोजना चल रही है। इन दोनों देशों का एक और अहम पड़ोसी पाकिस्तान है, जो चीन का खास दोस्त और इस प्रोजेक्ट में भी अहम भागीदार है।

रिपोर्ट के मुताबिक, सुरक्षा के नजरिए से चीन और पाकिस्तान दोनों अफगानिस्तान को अपने-अपने क्षेत्रों

में आतंकी गतिविधियों के प्रसार के खिलाफ एक महत्वपूर्ण सुरक्षा बफर के रूप में देखते हैं। इस कारण चीन और पाकिस्तान ने तालिबान को अपने हितों की रक्षा के लिए एक अच्छे विकल्प के तौर पर चुना है। तालिबान दोनों के लिए अहम है, क्योंकि उसने अफगानिस्तान के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण किया हुआ है।

पाकिस्तान की हालिया समय में तालिबान से कुछ शिकायतें भी रही हैं। वह आतंकवादी समूहों से लड़ने के अपने वादे पर खरा उतरता नहीं कर रहा है। इसके बाद चीन ने पाकिस्तान को दरकिनार कर तालिबान के साथ संबंधों का विस्तार किया है। ये क्षेत्र को संतुलित करने की इच्छा को दिखाता है। तालिबान के साथ चीन की सक्रिय भागीदारी के साथ ही ये भी ध्यान देने की बात है कि पाकिस्तान के तालिबान से हाल में रिश्ते अच्छे नहीं है। इससे कहीं ना कहीं त्रिपक्षीय सहयोग की संभावनाएं प्रभावित हो रही हैं।

अगस्त 2021 में तालिबान के काबुल पर कब्जा करने के बाद से ही चीन अफगानिस्तान में कई पहलुओं में पहला प्रस्तावक रहा है। मानवीय सहायता प्रदान करने, बड़े निवेश सौदों पर हस्ताक्षर करने, काबुल में राजदूत नियुक्त करने और तालिबान राजदूत को स्वीकार करने वाला चीन पहला देश रहा है। चीन ने वास्तव में खुद को तालिबान के लिए एक भरोसेमंद भागीदार के रूप में स्थापित किया है, जो युद्धग्रस्त देश के विकास में सहायता करने को तैयार है। साथ ही तालिबान शासन को अंतरराष्ट्रीय और राजनीतिक वैधता प्राप्त करने में भी मदद कर रहा है।

जल्द ही इंसानों के बर्दाश्त की हद से आगे निकल जाएगी गर्मी, मौसम वैज्ञानिकों ने दी चेतावनी

लंदन (एजेंसी)। असहनीय गर्मी के कारण घर के बाहर रह कर काम करने के लिए उपलब्ध मूल्यवान घंटे कम हो जाते हैं। एक हालिया शोध के अनुसार, अत्यधिक तापमान और आर्द्रता के कारण कई अरब कार्य घंटों का नुकसान हुआ। इस प्रवृत्ति के वैश्विक परिणाम होंगे। अर्थ सिस्टम साइंस के प्रोफेसर मार्क मास्लिन ने बताया कि दुनिया का आधा भोजन छोटे किसानों के खेतों में उगता है, जहां किसान मेहनत करके फसल तैयार करते हैं। जैसे-जैसे दुनिया गर्म होगी, ऐसे दिन ज्यादा होते जाएंगे, जब बाहर काम करना शारीरिक रूप से असंभव हो जाएगा, जो उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा को कम करेगा। लेकिन कार्डिफ यूनिवर्सिटी के मार्क ओ कथबर्ट के नेतृत्व में फरवरी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि विस्तारित पार्कलैंड के बीच हरियाली लगाने के साथ छतों और दीवारों को हरा भरा करने से या तो बाढ़ को कम किया जा सकता है या गर्मी को कम किया जा सकता है, लेकिन यह दोनों एक शहर में नहीं हो सकता।

कथबर्ट और उनके सह-लेखकों, ऑस्ट्रेलिया में यूएनएसडब्ल्यू सिडनी के डेनिस ओकारोल और जर्मनी में कार्लजूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के गेब्रियल सी राउ के अनुसार, शहरों के गर्म मौसम में गर्म होने और भारी वर्षा के दौरान बाढ़ का कारण एक ही है। कंक्रीट और स्टील की प्रचुरता गर्मी को अवशोषित और बरकरार रखती है, जबकि वही सीलबंद सतहें एक स्पंज की तरह काम नहीं कर सकती हैं कि बारिश को सोख लें और स्टोर कर लें, जैसे मिट्टी करती है, जिसकी जगह इन्होंने ले ली है। शोधकर्ताओं का तर्क है कि उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में हरियाली वाले शहर जैसे कि उत्तरी यूरोप और भूमध्य रेखा के आसपास मजबूत हीटवेव को कमजोर कर सकते हैं, क्योंकि पौधे प्रकाश संश्लेषण के दौरान जल वाष्प छोड़ते हैं, जिसका शीतलन प्रभाव होता है।

हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट ने सुझाव दिया कि अफ्रीका दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में तेजी से गर्म हो रहा है। केन्या में आगा खान विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर अब्दु मोहिद्दीन का कहना है कि 2030 तक 11 करोड़ 80 लाख अत्यधिक गरीब लोग सूखे और भीषण गर्मी के विनाशकारी प्रभावों की गिरफ्त में होंगे। मोहिद्दीन का कहना है कि गर्म वातावरण के अनुकूल होने के लिए महाद्वीप को तत्काल वित्तीय और तकनीकी सहायता की आवश्यकता है, साथ ही यह आकलन करने के लिए अनुसंधान निधि की आवश्यकता है कि कौन और कहां सबसे कमजोर है।

इन क्षेत्रों और अन्य क्षेत्रों में, पारंपरिक वास्तुकला से प्राप्त डिजाइन और निर्माण तकनीकें राहत के कुछ सबसे सस्ते और सबसे टिकाऊ रूपों की पेशकश कर सकती हैं। नॉटिंघम ट्रेंट यूनिवर्सिटी में इंटेलिजेंट इंजीनियरिंग सिस्टम के प्रोफेसर अमीन अल-हबेबेह ने उन तरीकों का अध्ययन किया है, जिन्होंने फारस की खाड़ी में सर्दियों से लोगों को ठंडा रखने में मदद की है। यहां, चूना पत्थर और अन्य प्राकृतिक सामग्रियों से बने घर नमी होने पर नमी को अवशोषित करते हैं और गर्म और धूप वाले दिनों में वाष्पीकरण के माध्यम से इसे छोड़ते हैं। अल-हबेबेह कहते हैं, यह थोड़ा ठंडा प्रभाव प्रदान करता है। इमारतों की रेतीली बनावट और रंग भी बहुत सारे

सौर विकिरण को दर्शाता है।

टॉम मैथ्यूज और कॉलिन रेमंड, किंग्स कॉलेज लंदन और कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के जलवायु वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि मौसम की सीमा, जिसका पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य सामना कर सकते हैं ग्रह के गर्म होने के साथ बदल रही है। इसका मतलब है कि गर्मी उस चरम सीमा को पार कर जाएगी, जिसमें मनुष्य जीवित रह सकता है। 2021 के एक अध्ययन में बताया गया है कि 1991 के बाद से अत्यधिक गर्मी के कारण होने वाली तीन मौतों में से एक को जलवायु परिवर्तन से जोड़ा जा सकता है।

टी20 विश्व कप का मंच तैयार भारत पाकिस्तान को मिलेगी कड़ी टक्कर

नई दिल्ली। आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 शुरू होने के लिए तैयार है। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में खिताब की तलाश में 20 टीमें एक साथ आएंगी।

ग्रुप ए में एशियाई ताकतवर भारत और पाकिस्तान शामिल हैं, जिन्हे सह-मेजबान अमेरिका और कनाडा के साथ-साथ आयरलैंड से भी कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिलेगी।

रोहित शर्मा के नेतृत्व में भारत का लक्ष्य हाल की विश्व प्रतियोगिताओं में लगातार हार का सिलसिला तोड़ना है। यशस्वी जयसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत और संजू सैमसन समेत स्टार-स्टडेड लाइनअप के साथ, भारत की बल्लेबाजी की गहराई जबरदस्त है। हरफनमौला खिलाड़ी हार्दिक पंड्या, रवींद्र जड़ेजा, अक्षर पटेल और शिवम दुबे बहुमुखी प्रतिभा जोड़ते हैं, जबकि

जसप्रित बुमरा के नेतृत्व में गेंदबाजी आक्रमण हावी होने के लिए तैयार है।

चोट से वापसी करते हुए, बुमराह भारत के अभियान के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिन्होंने हाल के मैचों में असाधारण फॉर्म दिखाया है। बाबर आज़म के नेतृत्व में, पाकिस्तान हालिया करीबी कॉल के बाद आईसीसी ट्रॉफी सुरक्षित करने के मिशन के साथ टूर्नामेंट में प्रवेश कर रहा है। टीम की बल्लेबाजी बाबर, मोहम्मद रिजवान और फखर जमान पर निर्भर है, जबकि गेंदबाजी का नेतृत्व शाहीन अफरीदी करेंगे।

आजम की बल्लेबाजी में निरंतरता पाकिस्तान के लिए महत्वपूर्ण होगी, खासकर टीम का नेतृत्व करने के दबाव में। पॉल स्टर्लिंग आयरलैंड की कप्तानी कर रहे हैं। वे प्रभाव छोड़ना चाहते हैं। हैरी टेक्टर, मार्क अडायर और जोश लिटिल जैसे खिलाड़ियों वाली संतुलित टीम के साथ, आयरलैंड का लक्ष्य पहली बार ग्रुप चरण से आगे बढ़ना है।

टूर्नामेंट में आयरलैंड की महत्वाकांक्षाओं के लिए पॉल स्टर्लिंग का नेतृत्व और बल्लेबाजी कौशल महत्वपूर्ण है। टी20 विश्व कप में पदार्पण करते हुए, अमेरिका का नेतृत्व मोनांक पटेल कर रहे हैं, जिसमें कोरी एंडरसन और अली खान जैसे प्रमुख खिलाड़ी टीम को मजबूत कर रहे हैं। टीम 2004 के बाद अपने पहले बड़े आईसीसी आयोजन में एक मजबूत छाप छोड़ना चाहती है।

अली खान की गति और अनुभव के यूएसए के अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। कप्तान साद बिन जफर अपने पहले टी20 विश्व कप में कनाडा का नेतृत्व कर रहे हैं। टीम में अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं, जिसमें कंवरपाल ताथगुर जैसे कुछ नए चेहरों के साथ नई प्रतिभाएं शामिल हैं।

साद बिन ज़फ़र का सर्वांगीण कौशल और नेतृत्व कनाडा की रणनीति के केंद्र में हैं। जैसे ही टूर्नामेंट शुरू होगा, क्रिकेट प्रशंसक ग्रुप ए में रोमांचक मैचों और तीव्र प्रतिद्वंद्विता की उम्मीद कर सकते हैं।

आईपीएल 2024 : फाइनल में हार के बाद एसआरएच की सह-मालिक काव्या मारन की आंखों से टपके आंसू

चेन्नई (एजेंसी)। आईपीएल फाइनल में कोलकाता नाइट राइडर्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को हराकर अपना तीसरा खिताब जीता। इस हार के बाद हैदराबाद स्थित फ्रेंचाइजी की सह-मालिक और सीईओ काव्या मारन खुद को रोक नहीं पाई और उनकी आंखों से आंसू टपकने लगे।

चेपक में खेले गए एकतरफा मुकाबले में केकेआर ने सनराइजर्स को आठ विकेट से हराकर 10 साल बाद ट्रॉफी अपने नाम की। 2012 और 2014 में खिताब जीतने के बाद यह केकेआर का तीसरा आईपीएल खिताब था। खेल के प्रति अपने प्यार और स्टैंड में मौजूद लोगों की प्रतिक्रियाओं के लिए जानी जाने वाली काव्या हार के बाद रो पड़ीं, लेकिन फिर भी उन्होंने फाइनल से पहले टीम के शानदार प्रदर्शन की सराहना की।

हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस को पहले बल्लेबाजी करने के अपने फैसले पर पछतावा हुआ, क्योंकि उनकी टीम 18.3 ओवर में 113 रन पर ढेर हो गई। कोलकाता के गेंदबाजों में आंद्रे रसेल सबसे सफल रहे जिन्होंने एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेले गए एकतरफा मुकाबले में 19 रन देकर 3 विकेट चटकाए। उनकी टीम ने 10.3 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया, जिसमें वेंकटेश अय्यर ने 26 गेंदों पर नाबाद 52 रन बनाए।

मिचेल स्टार्क ने दिया बड़ा संकेत, एक दिवसीय क्रिकेट से ले सकते हैं संन्याय

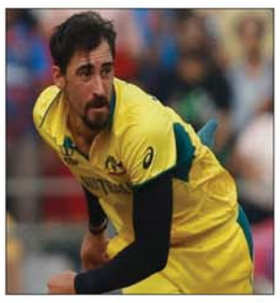

कोलकाता (एजेंसी)। आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क निकट भविष्य में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास ले सकते हैं। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के सदस्य स्टार्क ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 का खिताब जीतने के बाद कहा, 'पिछले नौ साल मैंने ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट को दिए हैं। जब क्रिकेट से समय मिलता था, तब मैं वह समय अपनी पत्नी और परिवार को देता था लेकिन अब मैं अपने करियर के आखिरी पड़ाव पर हूं और फ्रैंचाइजी क्रिकेट खेलना चाहता हूं। वनडे विश्व कप अभी बहुत दूर है, तो मैं एक फॉर्मैट को छोड़ भी सकता हूं।' स्टार्क इससे पहले 2014 और 2015 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) के लिए खेल चुके हैं। हालांकि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को तवज्जो देते हुये उन्होंने आईपीएल के पिछले कुछ संस्करणों में रुचि नहीं दिखलाई थी। ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज ने कहा, 'सच कहूं तो मैंने इस आईपीएल सीजन का पूरा लुत्फ उठाया। इसके बाद हमें विश्व कप खेलना है, जिसका अपना लाभ है। इस लीग में दुनिया के बेहतरीन खिलाड़ियों के साथ और खिलाफ खेलने के बाद आप विश्व कप के लिए भी तैयार होते हैं। इस तरह यह विश्व कप की तैयारियों का भी एक हिस्सा है। मुझे नहीं पता कि अगले साल का क्या शेड्यूल है, लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि मैं फिर से केकेआर की बैंगनी और सुनहरे ड्रेस में यह टूर्नामेंट खेलता नज़र आऊंगा।' स्टार्क को इस साल केकेआर ने 24.75 करोड़ रूपए में खरीदा था और वह आईपीएल नीलामी के सबसे महंगे खिलाड़ी बने थे।

गौतम गंभीर से बात करते दिखे जय शाह, टीम इंडिया के हेड कोच को लेकर तेज हुईं चर्चाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीसीसीआई ने भारतीय टीम के हेड कोच की खोज जारी रखी हुई है। जहां केकेआर के मेंटॉर गौतम गंभीर के नाम पर चर्चाएं जारी हैं। वहीं रविवार को आईपीएल 2024 का फाइनल मुकाबले के बाद बीसीसीआई के सचिव जय शाह और गंभीर के बीच बातचीत हुई। जिसके बाद गंभीर को हेड कोच बनाने की अफवाहों ने तूल पकड़ लिया है।

बीसीसीआई ने 13 मई को भारतीय हेड कोच की तलाश शुरू की थी और आवेदन निकाले थे। आवेदन करने का आखिरी दिन आज यानी 27 मई को निर्धारित की गई है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में हाल ही में दावा किया गया कि गंभीर ने अभी तक पद के लिए आवेदन नहीं किया है और वे आखिरी दिन आवेदन कर सकते हैं।

पाक सीरीज के लिए आईपीएल से खिलाड़ियों को वापस बुलाना ईसीबी की गलती : वॉन

चेन्नई। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने कहा है कि आईपीएल प्लेऑफ से पहले अपने खिलाड़ियों को वापस बुलकर क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने गलती है। ईसीबी ने पाकिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज को देखते हुए कप्तान जोस बटलर सहित अपने सभी खिलाड़ियों को वापस बुला लिया था। वॉन ने कहा कि ऐसे में खिलाड़ियों को प्लेऑफ मुकाबलों में दबाव के बीच खेलने का अनुभव नहीं मिला। आगामी टी टी20 विश्व कप में यही अनुभव खिलाड़ियों के लिए बेहतर रहता। इंग्लैंड के कप्तान जोस बटलर , फिल साल्ट और विल जैक्स को ईसीबी ने पाकिस्तान के खिलाफ चार मैचों की टी20 सीरीज के लिए वापिस बुला लिया था। इस फैसले की महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर सहित कई पूर्व क्रिकेटरों ने आलोचना की थी। वॉन ने कहा, 'अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट पहले है पर आजकल आईपीएल में दबाव उससे कम नहीं रहता। इन खिलाड़ियों को प्रशंसकों, मालिकों और सोशल मीडिया के जिस दबाव का सामना करना होता है, वह बहुत बड़ा है। उन्होंने कहा, 'आईपीएल प्लेऑफ और दर्शकों का दबाव पाकिस्तान के खिलाफ टी20 खेलने के अनुभवी से कहीं अधिक होता। उन्होंने कहा, ' विशेष तौर पर साल्ट और जैक्स को तो बहुत कुछ सीखने को मिलता और उनकी तैयारी मजबूत होती, जिसका फायदा विश्वकप में मिलता ।

यूगांडा टीम को कोचिंग दे रहे पूर्व भारतीय क्रिकेटर अभय शर्मा

मुम्बई । पूर्व क्रिकेटर अभय शर्मा अब यूगांडा की क्रिकेट टीम को कोचिंग दे रहे हैं। आगामी टी20 विश्व कप को देखते हुए उन्हें कोच की जिम्मेदारी मिली थी। अभय भारत ए और भारत की अंडर-19 टीम के क्षेत्ररक्षण कोच रहे हैं। इसके अलावा वह दिल्ली रणजी टीम के भी कोच रहे हैं। वह भारतीय महिला क्रिकेट टीम के कोचिंग समूह का भी हिस्सा रहे हैं। यूगांडा अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने वाली आखिरी टीम है। इसके अलावा नामीबिया ने ही अफ्रीका क्वालीफायर से आईसीसी टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार अभय को मुख्य कोच की जो जिम्मेदारी मिली थी उसे उन्होंने संभाल लिय है। यूगांडा टीम अभी विश्व कप की तैयारियों के लिए श्रीलंका में अभ्यास कर रही है। इस दौरान उसके अभ्यास मैच खेलने की भी संभावनाएं हैं।

एमएस धोनी ने फिर बदला हेयरस्टाइल, अब नए लुक में आ रहे हैं नजर

मुम्बई । एमएस धोनी ने फिर से अपना लुक चेंज किया है। इसके लिए धोनी मशहूर हेयरस्टाइलिस्ट आलिम हकीम के यहां पहुंचे थे। जहां, सेलिब्रिटी स्टाइलिस्ट ने धोनी की तस्वीर शेयर की। साथ ही ये भी बताया कि हेयर सेशन के दौरान धोनी ने सैलून में क्या-क्या एक्टिविटीज कीं। आलिम हकीन ने सोमवार को इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है। इसमें उन्होंने लिखा है कि सिक्रेटली धोनी हमारे सैलून पहुंचे जो कि अपने आप में एक बड़ा सरप्राइज था। बता दें कि, आईपीएल 2024 में चेन्नई प्लेऑफ में नहीं पहुंच पाई थी। जिसके बाद चेन्नई को टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा। उसके बाद एमएस धोनी आईपीएल से टीम के बाहर होने के बाद अपने घर रांची पहुंचे, कुछ वक्त बिताने के बाद वह मुंबई पहुंचे थे। आलिम हकीम ने एमएस धोनी की अपने सैलून में फोटो शेयर की है। इसमें धोनी गॉगल्स पहने हुए नए लुक में नजर आ रहे हैं। आलिम ने आगे लिखा है कि हेयर-सेशन के दौरान धोनी ने कुछ विंटेज म्यूजिक प्ले की और उसका जमकर लुत्फ उठाया। इसने हमारे दिन को और शानदार बना दिया। उन्होंने लिखा कि जिंदगी में कुछ दिन होते हैं जो हमेशा के लिए यादगार बन जाते हैं। इसके आगे हकीम ने लिखा कि इन तमाम चीजों के लिए आपको ढेर सारा प्यार माही सर।

आईपीएल विजेता के साथ ही उपविजेता पर भी हुई पैसे की बारिश

-हर्षल और विराट को पर्पल और ऑरेंज कैप जीतने के लिए मिले 10-10 लाख रुपये

चेन्नई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 की खिताब विजेता कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ ही उपविजेता सनराइजर्स हैदराबाद भी इनामी राशि से मालामाल हो गयी है। केकेआर की टीम को आईपीएल ट्रॉफी जीतने के साथ ही 20 करोड़ का चेक भी मिला। वहीं फाइनल में हारी सनराइजर्स हैदराबाद को 12.50 करोड़ रुपये मिले।

रनर अप का चेक लेते हुए कप्तान पैट कमिंस काफी निराश थे। कमिंस की टीम ने पूरे सत्र में दमदार खेल का प्रदर्शन किया था पर फाइनल में केकेआर के सामने उनकी टीम पूरी तरह से बिखर गई। इसके अलावा शीर्ष टॉप चार में रहने वाली राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम को भी करोड़ों का इनाम मिला। राजस्थान रॉयल्स की टीम दूसरे क्वालीफायर में हार कर तीसरे स्थान पर रही थी। ऐसे में उसे 7 करोड़ का चेक मिला जबकि आरसीबी एलिमिनेटर में चौथे स्थान पर रही। आरसीबी को 6.5 करोड़ रुपये मिले।

वहीं सबसे ज्यादा 24 विकेट लेकर पर्पल कैप जीतने वाले हर्षल पटेल को 10 लाख रुपए मिले। वहीं सबसे अधिक रनों के लिए ऑरेंज कैप विजेता विराट को भी 10 लाख रुपये मिले।

इसके अलावा मोस्ट वैल्यूवल प्लेयर सुनील नरेन को भी 10 लाख रुपए मिले। इसके अलावा बेस्ट पिच क्यूरेटर और ग्राउंड स्टाफ को अवॉर्ड के साथ ही 50 लाख का चेक मिला। वहीं इसके अलावा पावर प्ले ऑफ द सीजन, सुपर स्ट्राइकर ऑफ द सीजन और गेम चेंजर ऑफ द सीजन के अवॉर्ड विजेता खिलाड़ियों को भी 10-10 लाख रुपये का इनाम मिला।

विश्व कप फुटबॉल क्वालीफिकेशन मैच में प्रशंसकों की भारी तदाद रहेगी : स्टिमक

भुवनेश्वर । भारतीय फुटबॉल टीम के मुख्य कोच इगोर स्टिमक का मानना है कि छह जून को कुवैत के खिलाफ होने वाले विश्व कप क्वालीफिकेशन मैच में भारतीय तादद में दर्शक रहेंगे। कुवैत के खिलाफ इस मैच में जीत दर्ज कर भारत इतिहास में पहली बार विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर में पहुंचने का प्रयास करेगा। इसके

अलावा स्टिमक के अनुसार दूसरा कारण ये है कि लोग करिश्माई स्ट्राइकर सुनील छेत्री को अपने अंतिम अंतरराष्ट्रीय मैच में खेलते हुए देखना चाहेंगे। छेत्री ने अपने करियर में अब तक भारत की ओर से सबसे अधिक 94 गोल किये है। वह अपने विदाई मैच के साथ ही अपना 151 मुकाबला खेलेंगे। इस प्रकार भारत की ओर से सबसे अधिक मैच खेलने का रिकार्ड भी उनके नाम होगा। स्टिमक ने कहा, ''इस मैच के महत्व को देखते हुए जिसमें हमें पहली बार तीसरे दौर के लिए क्वालीफाई करने के लिए एक जीत की जरुरत होगी। इसके साथ ही ये सुनील छेत्री का विदाई मैच भी रहेगा। ऐसे में हमें उम्मीद रहेगी कि सॉल्ट लेक स्टेडियम दर्शकों से भरा रहेगा।'' उन्होंने कहा, ''मुझे पूरा भरोसा है कि इस खेल के प्रशंसक देशर भर से कोलकाता पहुंचेंगे और हमारे खिलाड़ियों का हौंसला बढ़ाएंगे।'' कोच के अनुसार टीम पिछले दो सप्ताह से इस मैच के लिए अभ्यास कर रही है और अपनी कमजोरियों को भी दूर कर रही है। इस दौरान सभी खिलाड़ी अच्छी लय में हैं जिससे हमें अपनी जीत का भरोसा है।

दीपा करमाकर ने इतिहास रचते हुए एशियन चैंपियनशिप में जीता गोल्ड, आनंद महिंद्रा ने ऐसे दिया रियक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की स्टार जिम्नास्ट दीपा करमाकर ने इतिहास रच दिया है। दरअसल, उन्होंने जिम्नास्टिक में देश को एशियन सीनियर चैंपियशिप में गोल्ड मेडल दिलाया है। दीपा ये कारनामा करने वाली देश की पहली खिलाड़ी बन गई हैं। रविवार को उन्होंने वुमेन वॉल्ट में ये मेडल अपने नाम किया। दिपा करमानकर का वॉल्ट फाइनल में फाइनल के आखिरी दिन औसत 13.566 का था। ये टूर्नामेंट उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में खेला गया। वहीं दीपा की सफलता पर भारतीय बिजनेसमैन आनंद महिंद्रा ने भी रिएक्शन दिया है। 30 वर्षीय दीपा ने फाइनल में नॉर्थ कोरिया की किम सोन ह्यांग और जो क्योंग ब्योल को मात दी। ह्यांग का औसत स्कोर 13.466 था और ब्योल का स्कोर 12.966 का। दोनों ने क्रमशः सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। 2016 रियो ओलंपिक खेलों में वॉल्ट फाइनल में चौथे स्थान पर रहीं दीपा ने इससे पहले 2015 में इसी प्रतियोगिता में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। हालांकि, पहली बार किसी ने गोल्ड मेडल जीता है।

पीवी सिंधु की अगुवाई में भारतीय खिलाड़ियों से सिंगापुर ओपन में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी)। मंगलवार यानी 28 मई से शुरू हो रहे सिंगापुर ओपन 2024 में पीवी सिंधू, एचएस प्रणय और लक्ष्य सेन सहित शीर्ष भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी दमदार प्रदर्शन करके पेरिस ओलंपिक के लिए अपनी तैयारियों को पुख्ता करने की कोशिश करेंगे। इस ओपन में विजेता को 850,000 डॉलर (लगभग सात करोड़ रुपये) पुरस्कार राशि मिलेगी।

पेरिस ओलंपिक में दो महीने ही बचे हैं और चार वर्षों में होने वाले इन खेलों में भाग लेने से पहले खिलाड़ियों को खुद के खेल में सुधार करने के लिए सिंगापुर ओपन 750 के अलावा ऑस्ट्रेलियाई ओपन सुपर 500, इंडोनेशिया सुपर 1000, कनाडा ओपन सुपर 500 में भाग लेने का मौका मिलेगा। थाईलैंड ओपन में हाल ही में चैंपियन बनी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरुष जोड़ी ओलंपिक के लिए बेहतरीन लय में दिख रही हैं, जबकि सिंधू ने भी रविवार को मलेशिया मास्टर्स में उपविजेता रहने के बाद अपना दावा मजबूत किया है।

लक्ष्य और प्रणय पिछले कुछ समय से चली आ रही खराब लय को पीछे छोड़ पेरिस खेलों से पहले लय हासिल करने की पूरी कोशिश करेंगे। मलेशिया मास्टर्स के फाइनल में चीन की वांग झी यी के खिलाफ निर्णायक गेम में 11-3 की बढ़त को गंवाने वाली सिंधू यहां डेनमार्क की लीन होजमार्क कजेर्सफेल्ट के खिलाफ सकारात्मक शुरुआत करना चहेंगी। मलेशिया में सिंधू का सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबला लगभग 80-80 मिनटों तक चला था जिससे उनके लिए थकान से उबरना भी जरूरी होगा।

वह अगर शुरुआती दौर की बाधा को पार करने में सफल रही तो दूसरे दौर में उनके सामने रियो ओलंपिक चैम्पियन स्पेन की कैरोलिना मारिन की चुनौती हो सकती है। पुरुष युगल में विश्व में नंबर एक सात्विक और चिराग के सामने डेनमार्क के डेनियल लुंडगार्ड और मैड्स वेस्टरगार्ड की चुनौती होगी। लक्ष्य ने फ्रेंच ओपन और ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप में लगातार दो सेमीफाइनल में जगह बनाकर ओलंपिक क्वालीफिकेशन में प्रवेश किया था। यह युवा खिलाड़ी ब्रेक के बाद आ रहा है और पुरुष एकल में उसका सामना दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी विक्टर एक्सेलसेन से होगा।

एक्सेलसेन का हौसला रविवार को मलेशिया मास्टर्स चैम्पियन बनने के बाद काफी बढ़ा हुआ होगा। स्वास्थ्य समस्याओं से उबर रहे आठवीं वरीयता प्राप्त प्रणय को थाईलैंड ओपन के शुरुआती दौर में हमवतन मेइराबा लुवांग मैसनाम ने बाहर का रास्ता दिखाया था। विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता खिलाड़ी को सिंगापुर ओपन में बेल्जियम के जूलियन कैरागी के खिलाफ अपना अभियान शुरू करना है।

अन्य भारतीयों में किदांबी श्रीकांत जापान के पांचवें वरीय कोडाई नाराओका से भिड़ेंगे जबकि प्रियांशु राजावत पुरुष एकल में हांगकांग

के ली चेउक यियू के खिलाफ अपना अभियान शुरू करेंगे। महिला एकल में आकर्षी कश्यप का सामना पहले दौर में थाईलैंड की पोर्नपिचा चोइकेवोंग से होगा। ओलंपिक टिकट पक्का कर चुकी अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो की जोड़ी महिला युगल में अपने पहले मैच में यूक्रेन की पोलीना बुहरोवा और येवेनिया कांतिमिर से भिड़ेंगी। त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला जोड़ी का पहले दौर में मुकाबला चीनी ताइपे की चेंग यू-पेई और सुन यू-हिसंग की जोड़ी से होगा।

भारत ने उज्बेकिस्तान के खिलाफ मैचों के लिए 23 सदस्यीय महिला फुटबॉल टीम घोषित की

नयी दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने उज्बेकिस्तान के खिलाफ 31 मई और चार जून को ताशकंद में खेले जाने वाले दो अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैचों के लिए सोमवार को 23 सदस्यीय सीनियर महिला टीम की घोषणा की। टीम की 30 संभावित खिलाड़ियों ने हैदराबाद में श्रीनिधि डेक्कन एफसी के घरेलू मैदान पर दो सप्ताह तक प्रशिक्षण लिया जिसके बाद मुख्य कोच एल चाओबा देवी ने 23 सदस्यीय टीम का चयन किया। भारतीय दल बुधवार को ताशकंद रवाना होगा।भारत ने इस साल की शुरुआत में चार देशों के 'तर्किश विमेंस कप' में हिस्सा लिया था। टीम इसमें कोसोवो के बाद दूसरे स्थान पर रही थी। इस टूर्नामेंट में एस्टोनिया और हांगकांग भी टीमें भी शामिल थी।

भारतीय महिला फुटबॉल टीम

गोलकीपर- श्रेया हुडा, मैबाम लिनथोइनगांबी देवी, एम मोनालिसा देवी। डिफेंडर- एल आशालता देवी, संजू, हेमम शिल्की देवी, जूली किशन, अस्तम ओरांव, अरुणा बैग, सोरोखैबम रंजना चानू, वांगखेम लिन्थोइंगंबी देवी। मिडफील्डर- कार्तिका अंगमुथु, कविया, नाओरेम प्रियंगका देवी, नेहा, संध्या रंगनाथन, संगीता बासफोर, सौम्या गुगुलोथ, अंजू तमांग। फॉरवर्ड- काजोल डिसूजा, करिश्मा शिरवोइकर, प्यारी खाखा, सेटॉ लिंडा कॉम।

दक्षिण अफ्रीका ने एसबीआई पर लगाया जुर्माना

नई दिल्ली । दक्षिण अफ्रीका के बैंकिंग नियामक ने देश के प्रमुख बैंक एसबीआई की एक शाखा पर करोड़ों रुपये का जुर्माना लगाया है। इसकी जानकारी खुद एसबीआई ने शेयर बाजारों को दी है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा स्टॉक एक्सचेंजों को नियामक फाइलिंग में दी गई जानकारी के मुताबिक, यह कार्रवाई सेंट्रल बैंक ऑफ साउथ अफ्रीका के प्रूडेंशियल अथॉरिटी और बैंकिंग नियामक दक्षिण अफ्रीकी रिजर्व बैंक द्वारा की गई है। कार्रवाई के तहत अफ्रीकन सेंट्रल बैंक ने एसबीआई पर 10 मिलियन रैंड का जुर्माना लगाया है, जो भारतीय मुद्रा में लगभग 4.5 करोड़ रुपये है। एसबीआई पर लगाया गया जुर्माना दो हिस्सों में है, उनसे आधी से कुछ अधिक रकम (5.50 मिलियन रैंड) तुरंत चुकाने को कहा गया। एसबीआई का कहना है कि उसने इसका भुगतान अपनी एक दक्षिण अफ्रीकी शाखा के जरिए किया है। 4.5 मिलियन रैंड का शेष भुगतान 36 महीने के लिए निलंबित कर दिया गया है, भुगतान दी गई अवधि के भीतर अनुपालन पर निर्भर है। एसबीआई का कहना है कि दक्षिण अफ्रीकी सेंट्रल बैंक द्वारा की गई यह कार्रवाई कुछ नियमों के अनुपालन से संबंधित है। सेंट्रल बैंक ने यह कार्रवाई दक्षिण अफ्रीका के एफआईसी एक्ट के तहत फाइनेंस इंटेलिजेंस सेंटर एक्ट के कुछ प्रावधानों और संबंधित आदेशों और निर्देशों का पालन न करने के कारण की है। एसबीआई ने अनुपालन और कार्रवाई के बारे में अधिक जानकारी नहीं दी।

एनटीपीसी ने अखिलेश को बनाया बोंगाईगांव इकाई का प्रमुख

गुवाहाटी । सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी एनटीपीसी ने अखिलेश सिंह को असम में अपने बोंगाईगांव संयंत्र की व्यापार इकाई का प्रमुख नियुक्त किया है। एनटीपीसी ने कहा कि सिंह पहले छत्तीसगढ़ में कंपनी की 1,600 मेगावाट की लारा इकाई का नेतृत्व कर रहे थे। सिंह ने केसी. मुरलीधरन का स्थान लिया है। मुरलीधरन को एनटीपीसी दादरी में परियोजना प्रमुख के रूप में स्थानांतरित किया गया है। सिंह ने सोमवार को अपना कार्यभार संभाल लिया। भागलपुर विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिग्री लेने के बाद सिंह 1993 में एक कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में एनटीपीसी में शामिल हुए थे। अपने नए प्रभार के तहत सिंह असम में एनटीपीसी बोंगाईगांव में सभी गतिविधियों के समन्वय के लिए जिम्मेदार होंगे। एनटीपीसी बोंगाईगांव की उत्पादन क्षमता 750 मेगावाट है।

जिप इलेक्ट्रिक ने ईएनईओएस से जुटाए 1.5 करोड़ डॉलर

मुंबई । जिप इलेक्ट्रिक ने जापान की कंपनी ईएनईओएस से सीरीज सी फंडिंग के तहत 1.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाए हैं। यह पांच करोड़ अमेरिकी डॉलर के वित्त पोषण चक्र का हिस्सा है। इसमें चार करोड़ अमेरिकी डॉलर इक्विटी निवेश, जबकि बाकी एक करोड़ अमेरिकी डॉलर कर्ज है। सीरीज सी वित्त पोषण चक्र में मौजूदा निवेशकों यूनिकॉर्न्स, आईएएन फंड, उद्यम उत्प्रेरक, डब्ल्यूएफसी और अन्य ने भी हिस्सा लिया।बयान में कहा गया इस राशि का इस्तेमाल जिप के बेड़े को 21,000 से दो लाख इलेक्ट्रिक स्कूटर तक विस्तारित करने और 2026 तक भारत के 15 शहरों में अपनी सेवाओं का विस्तार करने के लिए किया जाएगा। जिप इलेक्ट्रिक के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि ताजा निवेश जिप को टिकाऊ ईवी समाधानों के साथ अंतिम छोर तक 'डिलीवरी' करने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि हम अपने बेड़े का विस्तार करने और अपने प्रौद्योगिकी मंच को बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं।

भारत पे, फोन पे पर चल रहे सभी ट्रेडमार्क विवाद सुलझे

नई दिल्ली । वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियों भारतपे ग्रुप और फोनपे समूह ने प्रत्यय 'पे' के साथ ट्रेडमार्क के उपयोग से संबंधित लंबे समय से चले आ रहे सभी कानूनी विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा लिया है। दोनों कंपनियों के संयुक्त बयान के अनुसार भारतपे और फोनपे पिछले 5 वर्षों के दौरान कई अदालतों में लंबे समय से चले आ रहे कानूनी विवादों में रही हैं। यह समझौता सभी खुली न्यायिक कार्रवाई को समाप्त कर देगा। बयान में कहा गया कि भारतपे और फोनपे ने लंबे समय से चले आ रहे सभी ट्रेडमार्क विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझा लिया। बयान के अनुसार अगले कदम के रूप में पार्टियों ने ट्रेडमार्क रजिस्ट्री में एक-दूसरे के खिलाफ सभी विरोधों को वापस लेने के लिए पहले ही कदम उठा लिया है, जिससे उन्हें अपने संबंधित ट्रेडमार्क के पंजीकरण के साथ बढ़ने में मदद मिलेगी।

पोको पेड ग्लोबली लॉन्च, कीमत है लगभग 27,400 रुपये

नई दिल्ली।

दो आकर्षक कलर में पोको पेड ग्लोबली लॉन्च कर दिया गया है। इसकी कीमत लगभग 27,400 रुपये है। अर्ली बर्ड ऑफर के तहत इसे 299 डॉलर यानी लगभग 24,900 रुपये में खरीदा जा सकता है। यह ब्लू और ग्रे कलर में लाया गया है। यह एक स्टोरेज वेरिएंट 8जीबी प्लस 256जीबी में लाया गया है। डिस्प्ले- पोको पेड में 12.1-इंच 2.5के (2,560 गुणा 1,600 पिक्सल) एलसीडी स्क्रीन है, जिसमें 120एचझेड एडेप्टिव रिफ्रेश रेट, 240 एचझेड टच सैंपलिंग रेट, 600 नीटस पीक ब्राइटनेस लेवल, 16ः10 आस्पेक्ट रेशियो के साथ-साथ टीयूवी रीनलैंड लो ब्लू लाइट प्रमाणीकरण है। कैमरा- इस पोको पैड में पीछे और सामने 8-मेगापिक्सल का सेंसर है। इसमें डॉल्बी एटमॉस-के साथ क्वाड स्पीकर मिलते हैं, जो यूजर्स को सिनेमैटिक लेबल पर ऑडियो क्वालिटी देता हैं। बैटरी- इसमें 10,000

एमएएच की बैटरी है, जो यूएसबी टाइप-सी पोर्ट और 33वॉट वायर्ड फास्ट चार्जिंग सपोर्ट के साथ आती है।इसमें कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास 3 सुरक्षा मिलती है। प्रोसेसर- इसमें 4एनएम ऑक्टा-कोर स्नैपड्रैगन 7एस जेन 2 प्रोसेसर है, जो क्वालकॉम एड्रेनो जीपीयू, 8जीबी एलपीडीडीआर4गुणा रैम और 256 जीबी यूएफएस 2.2 ऑनबोर्ड स्टोरेज के साथ जोड़ा है।

फैशन ब्रांड ने निवेशकों से जुटाए 50 करोड़

मुंबई ।

फैशन ब्रांड इंडिया के विनिर्माता हाई स्ट्रीट एसेंशियल्स ने जेएसडब्ल्यू समूह और अन्य निवेशकों से 50 करोड़ रुपये जुटाने की सोमवार को घोषणा की। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि वित्त पोषण का तीन-चौथाई हिस्सा अल्पमत हिस्सेदारी के लिए इक्विटी निवेश है, जबकि बाकी कर्ज है। अे धिकारी ने कहा कि इंडिया भविष्य में विपणन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में जेएसडब्ल्यू की विशेषज्ञता से लाभ उठा सकती है। इंडिया की स्थापना 2012 में की गई थी। वर्तमान में इसके आठ शहरों में 12 विशिष्ट ब्रांड आउटलेट और 150 बड़े खुदरा आउटलेट हैं। बयान के अनुसार इस साल अप्रैल में इसका परिचालन लाभ में आया। यह व्यवसाय विस्तार के लिए जुटाए गए धन का उपयोग करेगी। वित्त वर्ष 2024-25 में कंपनी की योजना 30 लाख डॉलर तक निवेश करने की है।

एनएसई ने 250 रुपए से कम वाले शेयरों के लिए टिकट साइज घटाया

मुंबई ।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) की ओर से 250 रुपये से कम वाले शेयरों का टिकट साइज एक पैसा किया गया है। हाल ही में एनएसई द्वारा जारी किए गए सर्कुलर में ये जानकारी दी गई है। बता दें कि मौजूदा समय में शेयर में कम से कम 5 पैसे का टिकट साइज है। टिकट साइज कम होने का सीधा फायदा निवेशकों को मिलेगा। ये बदलाव 10 जून से लागू होगा। टिकट साइज एक अंतर होता है जो कि शेयर बिक्री करने वाले और शेयर खरीदने वाले के दाम के बीच होता है। ऐसे में टिकट साइज घटने से प्राइस की बेहतर डिस्कवरी हो पाएगी और खरीदारी एवं बिक्री करने वाले दोनों को सही कीमत मिलेगी। उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति 199.98 रुपये पर शेयर बेचना चाहता है तो आज ही स्थिति में 199.98 पर नहीं, बल्कि 199.95 या 200 रुपये पर सौदा हो पाएगा। ऐसे में टिकट साइज घटने से सौदा 199.98 पर ही हो सकेगा। सर्कुलर में दी गई जानकारी के मुताबिक, टिकट साइज 5 पैसे से घटाकर एक पैसा किया जा रहा रहा है। ये टी प्लस 1 सेटलमेंट के साथ टी प्लस जीरो सेटलमेंट में भी लागू होगा। एक्सचेंज की ओर से बताया गया कि टिकट साइज को आखिरी कारोबार सत्र में शेयर की कीमत के मुताबिक मासिक आधार पर रिव्यू और एडजस्ट किया जाएगा। सर्कुलर में आगे कहा गया कि 8 जुलाई से स्टॉक फ्यूचर्स में भी समान टिकट साइज सिस्टम लागू हो जाएगा। इसमें बदलाव एक्सपायरी के समय किया जाएगा।

मुनाफावसूली से बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 19.89 अंक , निफ्टी 24.65 अंक नीचे आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले अच्छी संकेतों के बाद भी मुनाफावसूली हावी होने से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स आज 76,009.68 अंक के स्तर तक जाने के बाद अंत में 0.03 फीसदी करीब 19.89 अंक नीचे आकर 75,390.50 पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 0.11 फीसदी तकरीबन 24.65 अंक टूटकर 22,932.45 अंक के स्तर पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की कंपनियों में विप्रो , एनटीपीसी, सन फार्मा, महिंद्रा एंड महिंद्रा, आईटीसी और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट आई। वहीं इंडसइंड बैंक, एक्सिस बैंक, बजाज फाइनेंस, एचडीएफसी बैंक, लार्सन एंड टुब्रो और भारतीय स्टेट बैंक के शेयर मुख्य रुप से लाभ में रहे। निवेशकों की अंतिम समय में मुनाफावसूली से सेंसेक्स दिन के शीर्ष स्तर से नीचे लुढ़क गया। इस दौरान सेंसेक्स 835 अंक गिरकर 75,175.27 के निचले स्तर पर आ गया। वहीं आईटीसी और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में गिरावट की वजह से भी बाजार नीचे आया है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में करीब एक फीसदी की गिरावट आई, जिससे बेंचमार्क इंडेक्स नीचे आ गये। इसके अलावा एफएमसीजी सेक्टर की दिग्गज कंपनी आईटीसी के शेयरों में बिकवाली से भी बाजार की बढ़त कम हुई है। वहीं इससे पहले आज सेंसेक्स इंट्रा-डे सत्र में पहली बार 76,000 के स्तर तक पहुंचा। इसके अलावा निफ्टी भी शीर्ष स्तर पर पहुंचने के बाद नीचे आया। इससे पहले आज सुबह बाजार की सकारात्मक शुरुआत हुई। बाजार के प्रमुख इंडेक्स ऊपर आये। एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स 0.35 फीसदी बढ़कर 75,671.07 के स्तर पर पहुंच गया, जबकि निफ्टी 50 0.31 फीसदी उछलकर 23,027.40 के स्तर पर कारोबार करते देखा गया। बीएसई पर, टाटा स्टील, भारती एयरटेल लाभ में रहें जबकि विप्रो, मारुति टॉप लूजर्स में रहें। इसी तरह एनएसई पर,` डिविस लैब के शेयर सबसे अधिक लाभ में रहे जबकि अदाणी एंटरप्राइजेज के शेयर नीचे आये। व्यापक बाजारों में, निफ्टी मिडकैप 52,811.65 के नए सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। इस बीच निफ्टी स्मॉलकैप करीब 1 फीसदी बढ़कर 17,049.50 के स्तर पर पहुंच गया।

सरकार ने कहा- दूरसंचार कंपनियां अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल पर प्रतिबंध लगाएं

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार ने दूरसंचार कंपनियों को भारतीय मोबाइल नंबर प्रदर्शित करने वाली सभी इनकमिंग अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल को प्रतिबंधित करने का निर्देश दिया है।

दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने कहा कि जानकारी` मिली है कि जालसाज भारतीय नागरिकों को भारतीय मोबाइल नंबर दिखाकर अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल कर रहे हैं और साइबर अपराध और वित्तीय धोखाधड़ी कर रहे हैं। बयान के अनुसार प्रतीत होता है कि ऐसी कॉलें भारत के भीतर से उत्पन्न हो रही हैं, लेकिन विदेशों से साइबर अपराधियों द्वारा कॉलिंग लाइन आइडेंटिटी (सीएलआई) में हेरफेर करके की जा रही हैं और फर्जी डिजिटल गिरफ्तारियों, फेडएक्स घोटाले, ड्रग्स या कूरियर में नशीले पदार्थों, सरकारी और पुलिस अधिकारी बनकर बात करने, डीओटी या ट्राई अधिकारी बनकर मोबाइल नंबरों को बंद करना, आदि जैसे हाल के मामलों में इसका दुरुपयोग किया गया है। बयान के अनुसार डीओटी और टेलीकॉम सेवा प्रदाताओं (टीएसपी) ने ऐसी अंतरराष्ट्रीय

फर्जी कॉलों की पहचान करने और उन्हें किसी भी भारतीय टेलीकॉम ग्राहक तक पहुंचने से रोकने के लिए एक प्रणाली तैयार की है। अब ऐसी आने वाली अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉलों को रोकने के लिए टीएसपी को निर्देश जारी किए गए हैं।

दूरसंचार विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार भारतीय लैंडलाइन नंबरों के साथ आने वाली अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉलों को टीएसपी द्वारा पहले से ही ब्लॉक किया जा रहा है।

मेघा इंजीनियरिंग बेचेगी अपना सिटी गैस कारोबार

नई दिल्ली ।

चुनावी बॉन्ड खरीदने वाली दूसरी सबसे बड़ी कंपनी हैदराबाद स्थित मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर (एमईआईएल) अब अपने सिटी गैस कारोबार को बेचने का मन बना रही है। मेघा इंजीनियरिंग 966 करोड़ रुपये के साथ चुनाव बॉन्ड की दूसरी सबसे बड़ी खरीदार रही है। कंपनी पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे थे। कंपनी के एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी मेघा सिटी गैस वितरण ने परिचालन को मजबूत करने का फैसला किया है। इसके लिए उसने इंडियन ऑयल कॉर्प, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्प, भारत पेट्रोलियम कॉर्प और इंद्रप्रस्थ गैस जैसी सरकारी कंपनियों से संपर्क किया है। हालांकि इस पर अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ है। हालांकि मामले से जुड़े एक अधिकारी का कहना है` कि कंपनियां अभी प्रस्ताव मूल्यांकन और आंकड़ों का अध्ययन कर रही हैं। मेघा सिटी गैस की संपत्तियों का मूल्यांकन करने वाली कंपनी के एक वरिष्ठ उद्योग अधिकारी के मुताबिक कंपनी ने जमीनी स्तर पर बहुत ज्यादा काम नहीं किया है। उन्होंने मूल्यांकन 1000 से 2000 करोड़ रुपये के बीच आंका है। बता दें कि मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर एक 5 बिलियन डॉलर की इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी है। कंपनी का कारोबार हाइड्रोकार्बन, इलेक्ट्रिक बसें, रक्षा, बिजली, परिवहन और विनिर्माण क्षेत्र में फैला हुआ है।

शाइन 100 बाइक की बिक गई तीन लाख यूनिट

-होंडा की इस बाइक के माइलेज पर लट्टू हुए लोग

नई दिल्ली ।

होंडा ने पिछले साल इंडियन मार्केट में 100सीसी इंजन वाली शाइन 100 को लॉन्च किया था। अब कंपनी ने ऐलान किया है कि इस बाइक की एक साल में 3 लाख यूनिट्स बिक गई हैं। होंडा शाइन 100 का सीधा मुकाबला हीरो स्प्लेंडर प्लस और एचएफ डीलक्स से होता है। कंपनी का कहना है कि पिछले वित्त वर्ष में 100-110 सीसी सेगमेंट की बाइक्स की डिमांड में जबरदस्त वृद्धि देखने को मिली है। मौजूदा समय में कंपनी देश भर में 6,000 से ज्यादा टॉचपॉइंट ऑपरेट कर रही है, जहां हर तरह की होंडा बाइक्स के लिए सेवाएं उपलब्ध हैं। होंडा ने शाइन 100 की सालगिरह को मनाने के लिए कई शहरों में मेगा डिलीवरी इवेंट का आयोजन भी किया था। शाइन 100 की बात करें तो इसमें 100 सीसी का सिंगल सिलेंडर एयर कूल्ड इंजन मिलता है। यह बाइक बेहतर माइलेज के लिए फ्यूल इंजेक्शन और होंडा ईएसपी तकनीक के साथ आती है। इसके अलावा इंजन को अपडेटेड बीएस6 आरडीई नियमों के अनुसार तैयार किया गया है। इस बाइक में फ्यूल पंप टैंक के बाहर है और यह ऑटो चोक सिस्टम के साथ आता है। यह बाइक 7.5 बीएचपी की पॉवर और 8.5 एनएम का टॉर्क जनरेट करती है। कंपनी ग्राहकों को इस बाइक के साथ 6 साल की आकर्षक वारंटी दे रही है। इसमें 3 साल की स्टैंडर्ड वारंटी के साथ 3 साल की एक्सटेंडेड वारंटी शामिल है। इस बाइक के कुछ स्टैंडर्ड फीचर्स की बात करें तो इसमें एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के साथ, कॉम्बी ब्रेक सिस्टम , इक्वलाइजर, साइड स्टैंड इंजन कटऑफ स्विच जैसे कुछ बेसिक फीचर्स मिलते हैं। माइलेज की बात करें तो इसमें आपको 65 केएमपीएल की माइलेज आसानी

से मिल जाएगी। कंपनी ने शाइन 100 की कीमत 65,011 रुपये (एक्स-शोरूम) तय की है। बता दें कि भारतीय बाजार में कम्यूटर सेगमेंट की बाइक्स बेचने के मामले में हीरो मोटोकॉर्प का कोई मुकाबला नहीं है। हालांकि, इस सेगमेंट में होंडा भी अपने कम्यूटर बाइक्स की लाइनअप के दम पर हीरो मोटोकॉर्प को तगड़ी टक्कर दे रही है।

दोपहिया वाहन सेफ्टी के मामले में अब काफी बेहतर

-स्टैंडर्ड सेफ्टी फीचर्स देना पड़ता है कंपनियों को जरुरी

नई दिल्ली।

अगर आप बाइक खरीदने जा रहे हैं तो आपको इनमें मिलने वाले कुछ सेफ्टी फीचर्स के बारे में जरूर पता होना चाहिए। बाइक के सेफ्टी फीचर्स मॉडल, कीमत और वैरिएंट के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। अगर भारत की बात करें तो पिछले कुछ सालों में दोपहिया वाहनों को सेफ्टी के मामले में काफी बेहतर किया गया है। अब सबसे सस्ती बाइक और स्कूटर में भी कुछ स्टैंडर्ड सेफ्टी फीचर्स कंपनियों को अनिवार्य रूप से देना पड़ता है। कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम सबसे कम कीमत वाली बाइक में भी आते हैं। यह बाइक में एक अनिवार्य सेफ्टी फीचर है जो टायर को स्किड होने से रोकता है। इस तरह की बाइक में एक ब्रेक दबाने पर दोनों ब्रेक एक साथ काम करते हैं। इससे दोनों पहियों पर बाइक को रोकने के लिए बराबर प्रेशर पड़ता है और टायर स्किड नहीं होते। एबीएस यानी एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम अब किफायती 110 सीसी और 125सीसी बाइक्स में भी आने लगा है।

बाइक में सिंगल चैनल और डुअल चैनल एबीएस दिए जाते हैं। यह बाइक को बिना फिसले रोकने में सीबीएस से भी बेहतर काम करता है। इसके लिए बाइक में अलग से कंट्रोल सिस्टम लगाया जाता है। वैसे तो ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम महंगी बाइक्स में मिलता है, लेकिन भारतीय बाजार में यामाहा जैसे कुछ कंपनियां इसे अपनी बजट मोटरसाइकिलों में भी दे रही हैं। अक्सर गीली सड़क या फिर मिट्टी में बाइक फिसलने का ज्यादा चांस होता है, यही वजह है कि इस फीचर को बाइक्स में शामिल किया जा रहा है। ये फीचर बाइक को फिसलने से रोकने में मदद करता है, साथ ही बढ़िया हैंडलिंग और ग्रिप भी ऑफर करता है।

जीप मेरीडियन फेसलिफ्ट हुई टेस्टिंग के दौरान स्पॉट

नई दिल्ली ।

भारत में जीप कंपनी मेरीडियन फेसलिफ्ट लाने की तैयारी कर रही है। अपकमिंग जीप मेरीडियन फेसलिफ्ट में नए एलईडी हेडलैंप, इनवर्टेड एल-शेप्ड एलईडी डीआरएल, रिवाइज्ड ग्रिल और सिल्वर एक्सेंट के साथ ट्वीक्ड फ्रंट बंपर जैसे बदलाव किए गए हैं। हाल ही में इस कार को टेस्टिंग के दौरान देखा भी गया है, जिसकी तस्वीरें भी सामने आई हैं। अपडेटेड मॉडल के लेवल 2 अडास तकनीक के साथ आने की उम्मीद है।

स्पाई शॉट में एसयूवी के इंटीरियर को भी दिखाई दे रहा है। उम्मीद है कि इसमें अपडेटेड अपहोल्स्ट्री, अपडेटेड एयरकॉन वेंट्स, एयर प्यूरीफायर, रियर विंडो शेड्स और फ्रंट और रियर डैश कैमरा जैसे बदलावों के साथ नया केबिन थीम मिलेगा। जीप मेरिडियन फेसलिफ्ट में 2.0-लीटर डीजल इंजन का इस्तेमाल जारी रहेगा, जो 170 एचपी की पीक पावर और 350 एनएम का अधिकतम टॉर्क पैदा करेगा।

इस इंजन को 6-स्पीड मैनुअल या 9-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा जाएगा।इसमें मौजूदा मॉडल की तरह ही इसमें फ्लोटिंग टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, मल्टी-फंक्शनल स्टीयरिंग व्हील, 360-डिग्री पार्किंग कैमरा, डुअल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल और डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले जैसे कई अन्य फीचर दिए गए हैं।

बंदरगाहों में पीपीपी बढ़ाकर 80 फीसदी करने का लक्ष्य

- केंद्र ने नीति आयोग को सौंपा प्रस्ताव

नई दिल्ली । बंदरगाहों में सार्वजनिक-निजी साझेदारी (पीपीपी) की हिस्सेदारी बढ़ाकर 80 फीसदी करने के उद्देश्य से सरकार वित्त वर्ष 2024-25 में 10,000 करोड़ रुपये की संपत्तियों का मुद्रीकरण करने की संभावना तलाशेगी। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने कहा कि पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय ने 5 परियोजनाओं में 10,000 करोड़ रुपये के मुद्रीकरण का प्रस्ताव नीति आयोग को सौंपा है। नीति आयोग संपत्ति मुद्रीकरण के लिए सरकार की नोडल संस्था है। इस बारे में जानकारी के लिए पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय को बीते शुक्रवार को ईमेल किया गया था मगर अब तक जवाब नहीं आया। हालांकि नई चिह्नित की गई परियोजनाएं पोत परिवहन मंत्रालय की वित्त वर्ष 2025 के लिए मुद्रीकरण के लक्ष्य का एक छोटा हिस्सा है। इनमें तमिलनाडु के तूतीकोरिन वीओ चिदंबरनार पोर्ट अथॉरिटी में 7,055 करोड़ रुपये का कंटेनर टर्मिनल शामिल है, जो 2023 से ही पाइपलाइन में है। अप्रैल में इस परियोजना के लिए अदाणी पोर्ट्स ऐंड स्पेशल इकनॉमिक जोन, सिंगापुर की पीएस इंटरनेशनल, डेनमार्क की वेन ओर्ड, तेएम बख्शी और जेएसडब्ल्यू इन्फ्रास्ट्रक्चर ने दिलचस्पी दिखाई थी। परियोजना का उद्देश्य क्षेत्र में वियतनाम की कंपनी विनफास्ट द्वारा इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण कारखाना के लिए 16,000 करोड़ रुपये के निवेश, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का तमिलनाडु के कुलसेकरपट्टनम में दूसरा स्पेसपोर्ट और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में सिंगापुर की सेम्बकॉर्प के 36,238 करोड़ रुपये के मेगा निवेश से प्रेरित नए निवेशकों की रुचि को भुनाना है।

50+
AGENTS

BUYING OR SELLING A PROPERTY?

LET'S WORK TOGETHER!

Buying or selling a property can be a stressful process if you don't have the right real estate agent. With 25 years of experience, you can rely on us to get you the best possible result.

propre
Luxury Real Estate

CONTACT:

INFO@PROPRELUXURYREALESTATE.COM
+91 9871577057
@PROPRELUXURYREALESTATE.COM

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, राजेश चौधरी द्वारा वत्स ऑफसैट, मुद्दा हाउस, सी. ब्लॉक, बारात घर के सामने, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित तथा ई-189, सेक्टर-63, नोएडा गौतमबुद्धनगर उ.प्र. से प्रकाशित।
संपादकः **जितेन्द्र चौधरी**, आरएनआई नं. UPHIN/2014/55236, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, फोन नं.: 9999511233, ई-मेल : vishalindianews@gmail.com, वेब : www.vishalindia.in